E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 108 | प्रयागराज, सोमवार 06 जुलाई 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

अमेरिका में आजादी के 250 साल का जश्न

अमेरिका को कम्युनिज्म नहीं चाहिए, हमने इसके खिलाफ दुनियाभर में जंग लड़ी-ट्रम्प

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका ने शनिवार को आजादी के 250 साल पूरे होने का जश्न मनाया। इस मौके पर देशभर में भव्य समारोह आयोजित किए। मुख्य कार्यक्रम वॉशिंगटन डीसी के नेशनल मॉल में हुआ, जहां राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने राष्ट्र को संबोधित किया। बारिश और आंधी-तूफान के कारण कार्यक्रम में देरी हुई, लेकिन मौसम साफ होने के बाद समारोह शुरू हुआ। अपने संबोधन में ट्रम्प ने कम्युनिज्म पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा, 'हम अपने देश में कम्युनिस्टों को नहीं चाहते। कम्युनिज्म हमेशा हारता आया है और आगे भी हारेगा। यह अमेरिकी व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है।' ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी सैनिकों ने दुनिया भर में कम्युनिज्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी, ताकि यह विचारधारा कभी अमेरिका के भीतर जगह न बना सके। भाषण के बाद नेशनल मॉल में करीब 40 मिनट तक रिकॉर्ड आतिशबाजी हुई। इस दौरान 8.5 लाख से ज्यादा फायरवर्क्स हुए। व्हाइट हाउस ने इसे अमेरिका के इतिहास का सबसे बड़ा स्वतंत्रता दिवस फायरवर्क शो बताया। अमेरिका की आजादी के 250 साल के जश्न की 5 बड़ी बातें:- वॉशिंगटन डीसी में हुई आतिशबाजी में 8.5 लाख गोले दागे गए। यह करीब 40 मिनट तक चली। देश के सभी 50 राज्यों

में परेड, एयर शो, कॉन्सर्ट और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। न्यूयॉर्क में जहाजों की परेड निकली, जिसमें भारत समेत दुनिया भर से आए जहाज शामिल हुए। फिलाडेल्फिया में टाइम कैप्सूल जमीन में दफन किया गया। इसे 250 साल बाद खोला जाएगा। इसमें आईफोन, कोका-कोला समेत सभी राज्यों के आम लोगों से जुड़ी चीजें रखी गईं। राष्ट्रपति ट्रम्प ने वॉशिंगटन के नेशनल मॉल से देश को संबोधित किया। मंच पर नासा के आर्टेमिस-छ: मिशन के अंतरिक्ष यात्री और पूर्व सैनिक भी मौजूद रहे। अमेरिका-250 कमिशन ने इस समारोह की तैयारी 2016 से ही शुरू कर दी थी। अमेरिकी कांग्रेस ने इसके लिए 150 मिलियन डॉलर (लगभग 1,250 करोड़) का फंड मंजूर किया। इसके अलावा निजी कंपनियों ने भी फंडिंग की। ट्रम्प के संबोधन की 5 बड़ी बातें:- कम्युनिज्म पर हमला बोला:-ट्रम्प ने कहा, 'अमेरिका में कम्युनिस्टों के लिए कोई जगह नहीं है। कम्युनिज्म हमेशा हारा है और आगे भी हारेगा।' उन्होंने इसे अमेरिकी लोकतंत्र और स्वतंत्रता के विपरीत बताया। 2. अमेरिका के 250 साल की उपलब्धियां गिनाईं:;- ट्रम्प ने कहा कि पिछले 250 वर्षों से अमेरिका दुनिया के लिए उम्मीद, आजादी और नेतृत्व का प्रतीक रहा है। उनके मुताबिक, आज अमेरिका पहले से ज्यादा मजबूत, सुरक्षित, समृद्ध और स्वतंत्र है। 3. संस्थापक नेताओं और 1776 के देशभक्तों को श्रद्धांजलि:-उन्होंने कहा कि 56 संस्थापक नेताओं ने सब कुछ दांव पर लगाकर अमेरिका की आजादी की नींव रखी। ट्रम्प ने कहा कि आज का अमेरिका उन्हीं के साहस और बलिदान का परिणाम है। 4. राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया:- ट्रम्प ने कहा, 'हम एक देश हैं, एक परिवार हैं और एक ही झंडे के नीचे खड़े हैं।' उन्होंने अमेरिकी नागरिकों से एकजुट रहने और देश के मूल्यों की रक्षा करने का आह्वान किया। 5. शहीद सैनिकों और गोल्ड स्टार परिवारों को सम्मान:-ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका की आजादी और उपलब्धियां उन सैनिकों की कुर्बानी की बदौलत हैं, जिन्होंने देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उन्होंने गोल्ड स्टार फैमिलीज को विशेष सम्मान दिया। वॉशिंगटन डीसी में फायरवर्क शो करीब 40 मिनट तक चला, जिसमें 8.5 लाख फायरवर्क शेल दागे गए। आतिशबाजी के लिए राजधानी में 50 अलग-अलग लॉन्चिंग पॉइंट बनाए गए थे।

खामेनेई के जनाजे में अंतिम दर्शन को उमड़ा जनसैलाब, ताबूत देखते ही रो पड़े लोग,नारे लगे- 'अमेरिका मुर्दाबाद'

तेहरान। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के राजकीय अंतिम संस्कार में शनिवार को तेहरान की सड़कों पर जनसैलाब उमड़ पड़ा। छह दिन तक चलने वाले इस अंतिम संस्कार के पहले दिन ग्रैंड मोसल्ला मस्जिद में सुबह से ही लाखों लोग अंतिम दर्शन के लिए पहुंचने लगे। अधिकारियों का अनुमान है कि पूरे कार्यक्रम में 1.5 करोड़ से 2 करोड़ लोग शामिल हो सकते हैं। खामेनेई का ताबूत ईरानी झंडे में लपेटकर मंच पर रखा गया था। उनके साथ हमले में मारे गए परिवार के अन्य सदस्यों के ताबूत भी रखे गए। ताबूत देखते ही कई लोग रो पड़े और कई श्रद्धालु फूट-फूटकर बिलखते नजर आए। इस दौरान भीड़ लगातार 'अमेरिका मुर्दाबाद' और 'इजराइल पर खुदा का कहर' के नारे लगाती रही। कई लोग बदला लेने की मांग वाले पोस्टर लेकर पहुंचे।अंतिम यात्रा 6 जुलाई को तेहरान से निकलेगी। इसके बाद पार्थिव शरीर 7 जुलाई को कोम, 8 जुलाई को इराक के नजफ और करबला और 9 जुलाई को मशहद ले जाया जाएगा, जहां पूरे राजकीय सम्मान के साथ दफनाया जाएगा। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-1. अंतिम संस्कार में 100 ज्यादा देशों के प्रतिनिधिमंडल पहुंचे: अयातुल्ला अली खामेनेई के राजकीय अंतिम संस्कार में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधिमंडल भी शामिल हुए। 2. तेहरान में अभूतपूर्व सुरक्षा और लोगों के लिए विशेष इंतजाम: अंतिम संस्कार को देखते हुए सेना और पुलिस की भारी तैनाती की गई। मेट्रो और सरकारी बसें मुफ्त रहीं, होटलों में 50फीसदी तक छूट दी गई, 5,000 से ज्यादा स्कूलों में ठहरने की व्यवस्था की गई और दूसरे शहरों से विशेष ट्रेनें चलाई गईं। 3. खामेनेई की अंतिम यात्रा 5 शहरों से गुजरेगी: अंतिम यात्रा तेहरान से शुरू होकर क़ोम, इराक के करबला और नजफ होते हुए 9 जुलाई को मशहद पहुंचेगी, जहां उन्हें सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। 4. ईरान ने अमेरिका से बातचीत रोकी, परमाणु ठिकानों के निरीक्षण से भी इनकार: अंतिम संस्कार के दौरान अमेरिका-ईरान के बीच चल रही अप्रत्यक्ष वार्ता फिलहाल रोक दी गई है। साथ ही ईरान ने अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी को फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु ठिकानों के निरीक्षण की अनुमति देने से इनकार कर दिया।

पद्म विभूषण पंडवानी गायिका तीजन बाई का निधन,नाना से महाभारत सुनाने की प्रेरणा मिली

रायपुर। छत्तीसगढ़ की लोक कला और पंडवानी गायन को वैश्विक पहचान दिलाने वाली पद्म विभूषण

डॉ. तीजन बाई का निधन हो गया। वे 70 साल की थीं। उन्होंने शनिवार रात 3.15 बजे रायपुर एम्स में अंतिम सांस ली। वे पिछले कुछ समय से बीमार थीं। तीजन बाई ने अपनी सशक्त आवाज, प्रभावशाली अभिनय और अनोखी प्रस्तुति शैली से पंडवानी को देश ही नहीं, बल्कि विदेशों तक में नई पहचान दिलाई। महाभारत की कथाओं को सुनाने की प्रेरणा उन्हें नाना से मिली थी। भारतीय लोक कला में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री, पद्म भूषण और देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। आज पैतृक गांव गनियारी में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीजन बाई के निधन पर शोक जताया। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'उन्होंने छत्तीसगढ़ की लोक कला को अपनी भव्य प्रस्तुति से दुनियाभर में पहचान दिलाई। उनका जाना कला और संस्कृति जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।' छत्तीसगढ़ के साथ ही विष्णुदेव साय ने कहा कि पंडवानी के जरिए उन्होंने देश-विदेश में राज्य का नाम रोशन किया। पीएम मोदी ने खुद फोन लगाकर स्वास्थ्य की जानकारी ली थी:-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीजन बाई के स्वास्थ्य की जानकारी ली थी। 1 नवंबर 2025 को प्रधानमंत्री मोदी ने तीजन बाई की बहू वेणु देशमुख को फोन लगाकर उनका हालचाल पूछा था। बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री ने चिंता जताई थी और हरसंभव मदद का आश्वासन दिया था। वेणु ने बताया, प्रधानमंत्री ने तबीयत पर अफसोस जताते हुए कहा था कि उनका ध्यान रखिए। अगर किसी भी चीज की जरूरत हो तो सीधे मुझसे संपर्क कीजिए। तीजन बाई जी छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपरा की धरोहर हैं।

जम्मू-कश्मीर में 2 लश्कर आतंकी मारे जाने की खबर,3 घंटे चला एनकाउंटर, एक पहलगाम हमले के बाद बनी हिट लिस्ट में शामिल था,

शोपियां। जम्मू-कश्मीर के शोपियां के सैदपोरा इलाके में फोर्स ने संभाला मोर्चा, आतंकी दिखे तो 4 गांव खाली कराए:-यह जिलों में दूसरे आतंकवादियों के साथ ट्रैक किया था। जाकिर का नाम

मीमंदर इलाके में लतीफ भट (बाएं) और जाकिर गनी (दाएं) की यह तस्वीर CCTV फुटेज से ली गई है।

शनिवार शाम से चल रही मुठभेड़ में लश्कर के 2 आतंकियों के मारे जाने की खबर है। सुरक्षाबलों ने इसकी पुष्टि नहीं की है। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मारे गए दोनों आतंकी लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के टॉप ऑपरेटिव थे। एक आतंकी जाकिर अहमद गनी उन 14 आतंकियों की लिस्ट में शामिल था, जिसे पहलगाम हमले के बाद खुफिया एजेंसियों ने जारी किया था। दूसरा आतंकी जाकिर का साथी लतीफ भट है। सुरक्षाबलों को शोपियां के सैदपोरा पायीन के पास छानपोरा इलाके में आतंकियों के छिपे होने की खबर मिली थी। घेराबंदी के दौरान जब जवान आतंकियों के ठिकाने के करीब पहुंचे तो उन्होंने फायरिंग कर दी। मुठभेड़ 4 जुलाई की शाम 7:45 बजे शुरू हुई थी। अंधेरे के कारण एनकाउंटर और सर्च ऑपरेशन रात में रोक दिया गया था। अभी तक आतंकियों के शव भी बरामद नहीं हुए हैं। विक्टर ऑपरेशन शुक्रवार दोपहर को शुरू किया गया था, जब सात गांव वाले मीमंदर इलाके के एक बाग में लगे सेना के कैमरे में ये दो आतंकी दिखाई दिए। सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की कई टुकड़ियों की टीम ने इलाके की घेराबंदी की और शाम तक 4 गांव खाली करा लिए। सेना की खास एंटी टेररिज्म यूनिट, 'विक्टर फोर्स' ने बाग के घने पेड़ों के बीच से भागने के सभी संभावित रास्तों को बंद करने के लिए अतिरिक्त जवान तैनात किए और इलाके में रोशनी का इंतजाम भी किया। जब सेना के जवान उनकी ओर बढ़े तो उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके जवाब में सेना ने भी प्रभावी ढंग से जवाबी कार्रवाई की और मुठभेड़ शुरू हो गई। रिपोर्ट्स में दावा- कुलगाम का रहने वाला था जाकिर:-सूत्रों के मुताबिक, कुलगाम के मुतलहम गांव के रहने वाले जाकिर अहमद गनी को सुरक्षा बलों ने कल दक्षिण कश्मीर के पाकिस्तान से जुड़े कई आतंकी हमलों से भी जुड़ा था। अक्टूबर 2025 में एनआईए कोर्ट ने इनके खिलाफ नोटिस जारी किया था और हाल ही में उनका नाम अप्रैल 2026 के पहलगाम आतंकी हमले की जांच से भी जुड़ा था। पहलगाम हमले के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने कश्मीर में 14 आतंकवादियों की सूची जारी की थी और उनके घर भी गिरा दिए गए थे। सुरक्षा रिकॉर्ड के मुताबिक, जाकिर 2024 से लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा हुआ है, जबकि लतीफ पिछले साल एलईटी में शामिल हुआ था। 14 लोकल आतंकियों में 9 मारे गए, अब 5 की तलाश:-अगर जाकिर गनी की मौत की पुष्टि हो जाती है तो 9वां आतंकी होगा, जिसे सुरक्षाबलों ने मार गिराया है। जिन 14 आतंकियों की लिस्ट जारी की थी, जाकिर गनी को मिलाकर उनमें से अब तक 9 मारे जा चुके हैं। 6 आतंकी मई 2025 में शोपियां और पुलवामा में एनकाउंटर के दौरान मारे गए थे।

मुजतबा का पिता को कंधा देने पर सस्पेंस, क्या इजराइल वाकई मार देगा

तेहरान। ईरान के सुप्रीम लीडर रहे आयतुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार की रस्में जारी हैं।

100 से ज्यादा देशों के नेता पहुंच रहे हैं। काले कपड़ों में रोते-बिलखते लाखों ईरानी अपने 'रहबर' का आखिरी दीदार करना चाहते हैं। इन सबके बीच ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई गायब हैं। पिता के जनाजे को कंधा देंगे या नहीं, इस पर भी सस्पेंस है। मुजतबा खामेनेई घायल हुए थे, लेकिन जिंदा हैं, 28 फरवरी, 2026 की सुबह। तेहरान में सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह खामेनेई के घर पर अमेरिका-इजराइल ने पहली स्ट्राइक की, तो कंपाउंड में मुजतबा भी मौजूद थे। इजराइली मीडिया ने मुजतबा के भी मारे जाने की आशंका जताई, लेकिन बाद में सूत्रों के हवाले से दावा किया कि मुजतबा बुरी तरह घायल हैं। ईरान के अधिकारियों के मुताबिक उन्हें सिर्फ मामूली चोटें आई थीं। ईरानी मीडिया ने मुजतबा को 'जानबाज' बताया। यह शब्द जंग में घायल हुए सिपाही के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 9 मार्च को ईरान की 88 सदस्यीय असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स ने उन्हें नया सुप्रीम लीडर चुन लिया। इसके बाद मीडिया में उनके 20 से ज्यादा लिखित संदेश जारी हुए, लेकिन उनकी कोई तस्वीर या वीडियो अब तक सामने नहीं आया है। मई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने भी कहा- हमें नहीं पता वो (मुजतबा खामेनेई) जिंदा हैं या नहीं। किसी ने उन्हें नहीं देखा, जो कि अजीब है। हालांकि, जून में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा था कि मुजतबा ईरान के ज्यादातर फैसलों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भी कह चुके हैं, 'मुझे लगता है कि मुजतबा खामेनेई जिंदा हैं। वो किसी बंकर या खुफिया ठिकाने पर हैं।' सवाल-2: जिंदा हैं, तो किस हाल में हैं मुजतबा? जवाब: कोई पुख्ता जानकारी नहीं, 3 तरह के दावे हैं-1. ब्रिटिश अखबार 'द टाइम्स' ने अप्रैल में रिपोर्ट की थी कि मुजतबा होश में नहीं हैं और वे कोमा में भी हो सकते हैं।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

ममता बोलीं- मुझे रोकना है तो मारना पड़ेगा, बागी नेताओं को चुनौती- हिम्मत है तो भाजपा में शामिल हा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में हार के बाद तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) में जारी बगावत के बीच ममता बनर्जी ने कहा कि पार्टी का चुनाव चिह्न कहीं नहीं जाएगा। अगर मुझे रोकना है तो मुझे मारना पड़ेगा। ममता ने बागी नेताओं को चुनौती देते हुए कहा, 'अगर हिम्मत है तो खुलकर बीजेपी में शामिल हो जाओ। तुम्हें क्या लगता है कि मैं खत्म हो गई हूं? मैं जनता के बीच पार्टी का चुनाव चिह्न लेकर जाऊंगी, मेरी आवाज कोई नहीं दबा सकता।' उन्होंने आरोप लगाया कि बागी नेता अब खुलकर बीजेपी के लिए काम कर रहे हैं। ममता ने कहा, 'गद्दारी की भी एक सीमा होती है।' ममता का यह बयान ऐसे समय आया है, जब पार्टी के 20 सांसद और 58 विधायक अलग गुट बना चुके हैं। 'शनिवार को टीएमसी की पश्चिम बंगाल अध्यक्ष चंद्रिमा भट्टाचार्य ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया। बाद में वह बागी गुट के नेता और विधानसभा में विपक्ष के नेता ऋतब्रत बनर्जी के साथ नजर आईं। चंद्रिमा भट्टाचार्य पूर्व अध्यक्ष, बंगाल टीएमसी ने कहां-'मैं रोज की तरह तय समय पर पार्टी हेडक्वार्टर से निकली थी। बागी नेता मेरे ऑफिस तक आए ही नहीं, इसलिए उन्हें रोकने का सवाल ही नहीं उठता। जब विश्वास ही खत्म हो जाए तो पार्टी में बने रहने का कोई कारण नहीं बचता।' ममता ने क्यों चुनौती दी:-ममता का साथ छोड़कर अलग हुए बागी विधायक और सांसद

फिलहाल भाजपा में शामिल नहीं हुए हैं। 3 जून को टीएमसी के 80 में से 58 विधायक ममता बनर्जी के नेतृत्व से अलग हो गए थे। उन्होंने अलग गुट बनाया, पार्टी सिंबल और नाम पर दावा किया। इसके अलावा 15 जून को टीएमसी के 20 सांसदों ने भी पार्टी छोड़कर त्रिपुरा की नेशनलिस्ट सिटिजंस पार्टी (एनसीपीआई) में विलय कर लिया था।ममता बोलीं- जिस पार्टी के दम पर चुनाव जीते, अब उसी से गद्दारी कर रहे-पूर्व सीएम ममता बनर्जी ने कहा कि जिन नेताओं ने उनके पार्टी सिंबल पर चुनाव जीता, वही अब कह रहे हैं कि 2023 के बाद पार्टी का अस्तित्व नहीं रहा। पार्टी ने ही उन्हें राजनीतिक पहचान दी, लेकिन अब वे उसी पार्टी के साथ विश्वासघात कर रहे हैं और खुले तौर पर भाजपा के लिए काम कर रहे हैं। अगर हिम्मत है तो खुलकर भाजपा में शामिल हो जाइए।कुछ लोगों ने केंद्रीय बलों की मदद से तृणमूल भवन पर कब्जा कर लिया। भवन का किराया अक्टूबर 2027 तक जमा है और पार्टी हर महीने एक लाख रुपए किराया देती है। यह किसी व्यक्ति की संपत्ति नहीं, बल्कि 'मां, माटी, मानुष' की संपत्ति है। इमारत पर कब्जा किया जा सकता है, लेकिन लोगों के दिलों पर नहीं। भाजपा ने वोट, वोटर लिस्ट और काउंटिंग प्रक्रिया को प्रभावित कर सत्ता हासिल की है। केंद्रीय बलों की मदद से मतगणना केंद्रों पर कब्जा किया गया और पूरी प्रक्रिया को हाईजैक किया गया। इसके बावजूद हमने नई सरकार को स्वीकार किया गया है।

खामेनेई की विदाई में काले कपड़े पहने लाखों लोग पहुंचे,बदला-बदला के नारे लगाए, ट्रम्प बोले- ईरान को हफ्ते भर की छुट्टी

तेहरान। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई को आखिरी विदाई देने के लिए खामेनेई के साथ उनकी 14 महीने की पोती, बेटी, पत्नी और दामाद को भी अंतिम श्रद्धांजलि

शनिवार को लाखों लोग तेहरान के ग्रैंड मोसल्ला में जुटे हैं। शिया परंपरा के मुताबिक काले कपड़े पहने लोग छाती पीटकर मातम मनाते दिखे। इस दौरान लोगों ने 'खून बहेगा', 'अमेरिका मुर्दाबाद' और 'बदला, बदला' जैसे नारे भी लगाए। तेहरान में 3 जुलाई से खामेनेई के अंतिम संस्कार से जुड़ी रस्में शुरू हो गई हैं जो 9 जुलाई तक चलेगी। कल शुक्रवार को कार्यक्रम में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। हालांकि रूस, चीन, भारत और तुर्किये जैसे देशों के टॉप लीडर्स ने इससे दूरी बरती। ईरान की तरफ से न्योता भेजे जाने के बावजूद इन्होंने अपने निचले स्तर के प्रतिनिधियों को भेजा। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया कि अमेरिका ने खामेनेई के अंतिम संस्कार के लिए ईरान को एक हफ्ते की छुट्टी दी है। ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने मानवता के नाते ऐसा किया है। कार्यक्रम खत्म होने के तुरंत बाद ईरान को अमेरिकी शर्तें माननी होंगी। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-खामेनेई के अंतिम संस्कार की शुरुआत: ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर खामेनेई का ताबूत तेहरान के इमाम खुमैनी ग्रैंड मुसल्ला पहुंचाया गया। यहां उनके अंतिम संस्कार के कार्यक्रम में कई देशों के प्रतिनिधिमंडल शामिल हुए। अली दी गई। अंतिम संस्कार के लिए तेहरान में कड़ी सुरक्षा: खामेनेई के अंतिम संस्कार को लेकर तेहरान की सड़कों पर सेना और पुलिस की भारी तैनाती की गई है। सभी मुख्य सड़कों, चौराहों और सरकारी इमारतों के बाहर सेना और पुलिस बल तैनात है। मेन रोड्स पर मिलिट्री गाड़ियां पहरा दे रही हैं। आम लोगों के लिए खास इंतजाम: खामेनेई के अंतिम संस्कार में शामिल आम लोगों के लिए तेहरान में मेट्रो और सरकारी बसें मुफ्त रहीं। साथ ही होटल किराए में 50फीसदी की छूट और स्कूलों-मस्जिदों में ठहरने की व्यवस्था की गई। दूसरे शहरों से लोगों को लाने के लिए स्पेशल ट्रेनें भी चलाई गईं। खामेनेई की अंतिम यात्रा 5 शहरों से गुजरेगी: अली खामेनेई की अंतिम यात्रा पहले ईरान के तेहरान, कोम से इराक के कर्बला, नजफ से होकर गुजरेगी।

आखिर में 9 जुलाई को मशहद में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता फिर शुरू होगी: कतर ने बताया कि खामेनेई के अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता का अगला दौर फिर शुरू होगा। वहीं ईरान ने आईएईए को फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु ठिकानों के निरीक्षण की अनुमति देने से इनकार कर दिया है।

प.बंगाल में लापता 11 साल की बच्ची का शव बोरे में मिला, दुष्कर्म के बाद हत्या का आरोप एक गिरफ्तार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के साउथ 24 परगना जिले के बारुईपुर इलाके में 11 साल की बच्ची का शव रविवार सुबह एक बोरे में मिला। बच्ची शनिवार दोपहर से लापता थी। स्थानीय लोगों का आरोप है कि उसके साथ दुष्कर्म के बाद हत्या की गई। हालांकि, पुलिस का कहना है कि इसकी पुष्टि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगी। घटना के बाद गुस्साए लोगों ने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर बारुईपुर-जयनगर रोड जाम कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने सड़क पर टायर जलाए और पुलिस की कुछ गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की।

मौके पर पहुंचे प्रेसिडेंसी रेंज के आईजी कंकरप्रसाद बरुई ने प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया कि मामले में शामिल सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया जाएगा।उन्होंने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस ने बताया कि मामले में एक व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस के मुताबिक, बच्ची शनिवार दोपहर अपनी दोस्त के जन्मदिन के लिए गिफ्ट खरीदने घर से निकली थी, जिसके बाद वह लापता हो गई। परिजनों का आरोप है कि 4 लोग उसे जबरन अपने साथ ले गए थे। मामले की जांच जारी है।

डीएम की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति की बैठक सम्पन्न

बैठक में सहकारी समितियों को बहुउद्देशीय केंद्र के रूप में विकसित कराने के दिये गये निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति (डीसीडीसी) की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सहकारिता क्षेत्र के सुदृढ़ीकरण एवं समितियों को बहुउद्देशीय सेवा केंद्र के रूप में विकसित करने हेतु विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में रिक्त ग्राम पंचायतों में नई सहकारी समितियों के गठन, उनकी व्यवहार्यता मूल्यांकन, सीएससी, जन औषधि केंद्र, प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र (पीएमकेएसके), पशु औषधि केंद्र संचालन, समितियों हेतु ग्राम सभा भूमि आवंटन, क्रय केंद्र एवं पीडीएस दुकान संचालन, भंडारण योजना अंतर्गत सुदृढ़ीकरण तथा संपर्क मार्ग उपलब्ध कराने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त बी-पैक्स उन्नयन, निष्क्रिय समितियों को सक्रिय करने, पीओएस मशीन उपलब्ध कराने, बी-पैक्स कंप्यूटरीकरण, जिला सहकारी बैंक द्वारा सीजीटीएमएसई सदस्यता तथा मत्स्य एवं डेयरी समितियों को बैंक से जोड़ने की प्रगति की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने सभी विभागों को समन्वय स्थापित करते हुए शासन की योजनाओं का लाभ ग्रामीण स्तर तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता विवेक कुमार सिंह, उप निदेशक कृषि हिमांशु पाण्डेय, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ0 कुलदीप द्विवेदी, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी ब्रजेश तिवारी सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम-एसपी ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण,जनपद के 19 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा सकुशल सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका व पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने आज आयोजित की गई उ0प्र0 शिक्षक पात्रता (यूपीटीईटी) की परीक्षा को नकल विहीन, पारदर्शी एवं सकुशल संपन्न कराने हेतु पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, श्री हेमकुंड पब्लिक स्कूल सहित विभिन्न परीक्षा केंद्रों का स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के समय सुरक्षा व्यवस्था की जांच की गई तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने बताया कि उक्त परीक्षा जनपद के 19 परीक्षा केन्द्रों पर 02, 03 व 04 जुलाई, 2026 को प्रत्येक दिवस को पांच पालियों में आयोजित की गई।

परीक्षा को सकुशल, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु सभी केंद्रों पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था की गई तथा अधिकारियों द्वारा भ्रमणशील रहकर लगातार निगरानी की गई। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ ने बताया कि आज की आयोजित उ0प्र0 शिक्षक पात्रता की परीक्षा में प्रथम पाली में कुल 8544 अभ्यर्थियों में से 7481 अभ्यर्थी उपस्थित व 1063 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहें।

निरीक्षण के दौरान जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

रायबरेली की छः विधानसभा क्षेत्रों के मतदेय स्थलों की आलेख्य सूची प्रकाशित,जनसामान्य के लिए निशुल्क निरीक्षण हेतु उपलब्ध

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उप जिला निर्वाचन अधिकारी रायबरेली सिद्धार्थ ने बताया कि मुख्य निर्वाचन अधिकारी, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के जारी निर्देशों एवं गाइडलाइन के अनुपालन में जनपद रायबरेली के छः विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों-177-बछरावां (अ0जा0), 179-हरचन्दपुर, 180-रायबरेली, 181-सलोन (अ0जा0), 182-सरेनी एवं 183-ऊँचाहार के मतदेय स्थलों का सम्भाजन लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा-25 के अंतर्गत किया गया है।उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निर्धारित समय-सारणी के क्रम में जनपद की सभी छः विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के मतदेय स्थलों की सूचियों का आलेख्य प्रकाशन आज, 04 जुलाई, 2026 को किया जा रहा है। आलेख्य प्रकाशित मतदेय स्थलों की सूचियां संबंधित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों के कार्यालयों (तहसील कार्यालयों)

जिला निर्वाचन कार्यालय, रायबरेली तथा जनपद की वेबसाइट https://raebareli.nic.in पर जनसामान्य के निशुल्क निरीक्षण हेतु उपलब्ध हैं।

गोसाईं बाबा धाम पर विशाल दुरदुरिया समारोह का आयोजन, सैकड़ों महिलाओं ने ग्रहण किया प्रसाद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। विकासखंड क्षेत्र के

ग्राम गढ़ा राजापुर स्थित प्राचीन गोसाईं बाबा धाम पर विशाल दुरदुरिया समारोह श्रद्धा, आस्था एवं भक्ति के वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह में ग्राम सभा की सैकड़ों श्रद्धालु महिलाओं ने श्रद्धापूर्वक दुरदुरिया का प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ अर्जित किया। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ला ने कहा कि माताओं-बहनों के दुरदुरिया कार्यक्रम में सबने प्रसाद ग्रहण किया। श्री भीम मौर्या ने कहा कि गांव,घर-परिवार की माताओं-बहनों की भागेदारी से कार्यक्रम बेहद सफल रहा! कार्यक्रम के दौरान दुरदुरिया पूजन की पावन कथा का श्रवण कराया गया, जिसे उपस्थित श्रद्धालुओं ने पूरे श्रद्धाभाव से सुना। इसके उपरांत भजन-कीर्तन एवं भक्तिमय गायन से पूरा परिसर भक्तिरस में डूब गया और वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो उठा। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने क्षेत्र की सुख-समृद्धि, शांति एवं जनकल्याण की कामना करते हुए आयोजन की सफलता के लिए आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का आयोजन ग्राम सभा गढ़ा के इन्द्रपाल मौर्य, सुरेश शुक्ल, गुड्डू यादव, राजेश मौर्य, विशम्भर पासी, राकेश मौर्य तथा समस्त सम्मानित ग्रामवासियों के सहयोग से संपन्न हुआ। आयोजन में बड़ी संख्या में ग्रामीणों एवं श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही, जिससे पूरा आयोजन धार्मिक आस्था और सामाजिक समरसता का अनुपम उदाहरण बन गया। इस अवसर पर कांग्रेस ब्लाक अध्यक्ष-छतोह श्री अनुराग द्विवेदी जी,राम भवन त्रिपाठी,रामेश्वर मिश्र,शिवभूषण शुक्ला,नरेन्द्र मौर्य,जितेन्द्र यादव,पंकज त्रिपाठी,राम खेलावन यादव,गोपीचंद पासवान,सदाशिव यादव,सत्य नारायण यादव,मोती लाल मौर्य,रामनाथ पासवान पूर्व बीडीसी,रतीपाल पासवान आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

राजकीय अनुसूचित जाति छात्रावासों में शैक्षिक सत्र 2026-27 हेतु ऑनलाइन प्रवेश आवेदन 6 से 25 जुलाई तक आमंत्रित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार

को जिला समाज कल्याण अधिकारी आर0वी0 सिंह ने बताया है कि समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित बाबू जगजीवन राम अनुसूचित जाति छात्रावास (बालक), मनिका रोड, रायबरेली, राजकीय अनुसूचित जाति छात्रावास, सिविल लाइन, रायबरेली, राजकीय अनुसूचित जाति छात्रावास (बालिका), रायबरेली तथा राजकीय अनुसूचित जाति छात्रावास, बछरावां, रायबरेली में शैक्षिक सत्र 2026-27 के प्रवेश के लिए छात्र-छात्राओं से 06 जुलाई से 25 जुलाई 2026 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। इच्छुक छात्र-छात्राएं विभाग के ऑनलाइन पोर्टल https://upswdhms.in पर निर्धारित अवधि के दौरान आवेदन कर सकते हैं। निर्धारित अंतिम तिथि के उपरांत प्राप्त किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। पात्र एवं इच्छुक अभ्यर्थी समयावधि के भीतर अपना ऑनलाइन आवेदन अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें।

भगवान जगन्नाथ हुए बीमार 15 दिनों के लिए मौसी के घर पहुंचे जहां डॉक्टर कर रहे इलाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। भगवान श्री जगन्नाथ बीमार हो गए हैं और 15 दिनों के लिए अपने मौसी के घर आए हैं जहां उनका डॉक्टर का इलाज चल रहा है प्रयागराज में वर्षों पुरानी चली आ रही पौराणिक परंपराओं को आगे बढ़ाई जा रही है। भीषण गर्मी से भगवान जगन्नाथ बीमार हैं और उनका इलाज चल रहा है। सुबह शाम औषधि काढ़ा और दवा का भोग लगाया जा रहा है। डॉक्टर के अनुसार रूटीन में उनके ब्लड प्रेशर आदि की जांच भी की जाती है। भगवान 15 जुलाई तक के लिए एकांतवाश में चले गए। यह सब सुनने में जरा अजीब लगेगा लेकिन मान्यताओं के अनुसार, यहां के लोग इसका पालन करते हैं। उनकी देखभाल की जा रही है। पुरी में जगन्नाथ जी प्राचीन परंपरा के अनुसार अब वो 14 दिन तक भगवान आराम करेंगे। केवल पुजारी और वैद्यजी को ही इलाज हेतु सुबह-शाम भगवान तक पहुंचने की इजाजत है। इस बार रथ यात्रा 16 जुलाई 2026 को निकाली जाएगी। भगवान का भोग और काढ़ा तैयार करने वाली प्रीति गुप्ता बताती हैं दरअसल पुरी के श्रीमंदिर में हर वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा स्नान करते हैं, जिसे 'स्नान पूर्णिमा' कहा जाता है। इस विशेष स्नान के बाद भगवान कुछ दिनों के लिए 'अनवसर' यानी बीमार हो जाते हैं और 14 दिन तक आराम करते हैं। इस दौरान मंदिर के पट बंद रहते हैं और केवल पुजारी एवं वैद्यराज ही भगवान की सेवा कर सकते हैं। लेकिन इस परंपरा के पीछे एक बेहद भक्तिमय कथा जुड़ी है। आइए जानते हैं विस्तार से। मंदिर के

प्रबंधक गगन गुप्ता बताते हैं एक समय पुरी में माधवदास नामक एक परम भक्त रहते थे। वे प्रतिदिन भगवान जगन्नाथ की पूजा-आराधना करते थे। एक दिन उन्हें अतिसार का गंभीर रोग हो गया। इतनी कमजोरी हो गई कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया, फिर भी उन्होंने किसी से सहायता नहीं ली और यथाशक्ति स्वयं सेवा करते रहे। जब माधवदास बिल्कुल अशक्त हो गए, तब स्वयं भगवान जगन्नाथ एक सामान्य सेवक के रूप में उनके घर आए और उनकी सेवा करने लगे। जब माधवदास को होश आया, तो उन्होंने प्रभु को पहचान लिया। भावविभोर होकर उन्होंने पूछा 'प्रभु! आप त्रिलोक के स्वामी होकर मेरी सेवा क्यों कर रहे हैं? यदि आप चाहते तो मेरा रोग ही समाप्त कर सकते थे!' भगवान ने उत्तर दिया 'भक्त की पीड़ा मुझसे देखी नहीं जाती, इसलिए स्वयं सेवा करने आया हूं। परंतु हर व्यक्ति को अपना प्रारब्ध भोगना ही पड़ता है। तुम्हारे प्रारब्ध में जो 15 दिन का रोग शेष है, वह मैं अपने ऊपर ले रहा हूं'-इसी घटना के बाद से यह परंपरा बनी कि भगवान जगन्नाथ हर वर्ष स्नान पूर्णिमा के बाद बीमार हो जाते हैं और 'अनवसर काल' में विश्राम करते हैं। यही कारण है कि हर साल आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को जब भगवान स्वस्थ होते हैं, तब अपने भक्तों के बीच भ्रमण के लिए रथ यात्रा पर निकलते हैं।

ब्लैक स्पॉट चिन्हित, लेकिन हादसों पर नहीं लग रहा ब्रेक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। जिले में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कई ब्लैक स्पॉट चिन्हित किए गए हैं, लेकिन इन स्थानों पर अब भी पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम नहीं होने से हादसों का सिलसिला जारी है। चेतावनी बोर्ड लगाए गए हैं, परंतु कई स्थानों पर पर्याप्त रोशनी, रिफ्लेक्टर, स्पीड कंट्रोल और अन्य सुरक्षा उपायों का अभाव बना हुआ है। विशेषकर मुख्य मार्गों के अंधे मोड़ों पर दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बना हुआ है। यातायात विभाग के अनुसार जिले में कई प्रमुख थाना क्षेत्रों के अंतर्गत दुर्घटना संभावित ब्लैक स्पॉट चिह्नित किए गए हैं। इनमें नैनी, सोरांव, झूंसी, करछना, फूलपुर, बहरिया, कोरांव और अन्य क्षेत्रों के प्रमुख चौराहे एवं मोड़ शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2024 में इन ब्लैक स्पॉट क्षेत्रों में 697 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं, जिनमें 309 लोगों की मौत हुई और 473 लोग घायल हुए। हादसों की सूचना मिलने के बाद औसतन 20 मिनट में पुलिस और एंबुलेंस मौके पर पहुंची। विशेषज्ञों का कहना है कि केवल ब्लैक स्पॉट चिन्हित कर देना पर्याप्त नहीं है। दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए सड़क इंजीनियरिंग में सुधार, बेहतर प्रकाश व्यवस्था, स्पीड ब्रेकर, रंबल स्ट्रिप, संकेतक बोर्ड और नियमित निगरानी जैसे उपायों को प्रभावी ढंग से लागू करना आवश्यक है। स्थानीय लोगों ने भी प्रशासन से मांग की है कि दुर्घटना संभावित स्थानों पर जल्द से जल्द सुरक्षा व्यवस्थाएं मजबूत की जाएं, ताकि सड़क हादसों में कमी लाई जा सके और लोगों की जान बचाई जा सके।

लखनऊ में 'जश्न 2026' सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन, अमिषी अरोरा ने मनमोहक प्रस्तुतियों से जीता दिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। 5 जुलाई 2026। Lyrics Academy of Music द्वारा

आयोजित वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'जश्न 2026' का आयोजन रविवार को बुद्धा रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑडिटोरियम, विपिन खंड, गोमती नगर, लखनऊ में उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में संगीत, नृत्य और वाद्य यंत्रों की रंगारंग प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। छोटे-छोटे कलाकारों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए भारतीय संस्कृति और कला की सुंदर झलक प्रस्तुत की। विशेष रूप से पारंपरिक नृत्य प्रस्तुतियों को दर्शकों ने खूब सराहा और तालियों की गड़गड़ाहट से कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।आयोजकों ने बताया कि 'जश्न 2026' का उद्देश्य बच्चों में संगीत और नृत्य के प्रति रुचि विकसित करना तथा उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए एक सशक्त मंच उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अभिभावक, अतिथि और कला प्रेमी उपस्थित रहे।

सभी ने बच्चों की मेहनत, आत्मविश्वास और उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की।

समारोह का समापन सभी प्रतिभागियों के सम्मान और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ हुआ।

भगवान हनुमान जी के हाथों में न्याय

प्रशासन से उठा भरोसा, हनुमान मंदिर में पत्र देकर राम मंदिर चंदा चोरी मामले में न्याय की गुहारः शशि प्रताप सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरहुआ (वाराणसी)। नेशनल

इक्वल पार्टी के संस्थापक व सहयोगी दल समाजवादी पार्टी के शशि प्रताप सिंह ने अयोध्या स्थित राम मंदिर में कथित चंदा चोरी के मामले में प्रशासन पर अविश्वास जताते हुए भगवान हनुमान से न्याय की गुहार लगाई। उन्होंने कैंटोनमेंट व कचहरी स्थित हनुमान मंदिर में एक पत्र अर्पित कर कहा कि अब उन्हें प्रशासन से नहीं, बल्कि भगवान से न्याय की उम्मीद है। शशि प्रताप सिंह ने अपने पत्र में उल्लेख किया कि अयोध्या धाम स्थित राम मंदिर की चंदा पेटी से कथित रूप से धनराशि चोरी होने की घटना अत्यंत गंभीर है। उनके अनुसार यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की धार्मिक आस्था से जुड़ा विषय भी है। उन्होंने भगवान हनुमान से प्रार्थना करते हुए कहा कि इस मामले की सच्चाई सामने आए, दोषियों की पहचान हो तथा उन्हें उनके कर्मों के अनुसार दंड मिले। साथ ही उन्होंने संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों से भी मांग की कि घटना की निष्पक्ष जांच कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। शशि प्रताप सिंह ने कहा कि जब प्रशासन से न्याय की उम्मीद कम हो जाती है, तब व्यक्ति भगवान की शरण में जाता है। इसी भावना के साथ उन्होंने हनुमान मंदिर में पत्र अर्पित कर न्याय की प्रार्थना की। उन्होंने यह भी कहा कि जैसे रामायण में माता सीता के हरण के बाद भगवान हनुमान ने उनकी खोज कर सत्य को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उसी प्रकार उन्हें विश्वास है कि भगवान हनुमान इस मामले में भी सत्य को उजागर करने की प्रेरणा देंगे। शशि प्रताप सिंह का आरोप है कि अयोध्या में हुई कथित चोरी के मामले में लीपापोती की जा रही है।

इसी कारण उन्होंने हनुमान मंदिर में पत्र देकर अपनी शिकायत दोबारा दर्ज कराने का प्रतीकात्मक प्रयास किया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वर्तमान व्यवस्था में भ्रष्टाचार और अन्याय बढ़ा है, जिससे लोगों का प्रशासन पर भरोसा कमजोर होता जा रहा है।

मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। मुख्य अतिथि मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महोत्सव का लक्ष्य किसानों की आय बढ़ाना और प्रदेश के आम को वैश्विक पहचान दिलाना है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश का आम 30 से अधिक देशों में निर्यात किया जा रहा है और जेवर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के विकसित होने से निर्यात लागत में कमी आएगी। गुणवत्ता सुधार के लिए पेपर बैगिंग तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे कीटनाशकों का प्रभाव कम होता है। हॉर्टिकल्चर एक्सपोर्ट प्रमोशन बोर्ड के गठन से 3000 से अधिक घरेलू निर्यातकों का नेटवर्क विकसित हुआ है। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए

उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 के अंतर्गत 35 से 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। समापन समारोह में आम की विभिन्न श्रेणियों और वर्गों की प्रतियोगिताओं में 147 पुरस्कार वितरित किए गए। मलिहाबाद के मोहम्मद इकबाल अहमद को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक का पुरस्कार मिला। महोत्सव में 1501 प्रतिभागियों द्वारा कुल 3032 नमूनों का प्रदर्शन किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 6 प्रतिशत अधिक था। कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण बी.एल. मीणा, विशेष सचिव राजकमल यादव और उद्यान निदेशक भानुप्रकाश राम सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उद्यान निदेशक भानुप्रकाश राम ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, किसानों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह महोत्सव उत्तर प्रदेश की बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के लिए नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करेगा।

सेंट जेवियर्स पिपरौली का चमका सितारा बने अफसर, बलिया की माटी के लाल रोहित बने ए-ग्रेड अफसर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) बलिया। 'सपने वही पूरे होते हैं, जिनके लिए नींद नहीं बल्कि मेहनत कुर्बान की जाती है।' इस बात को सच साबित कर दिखाया है। बलिया जिले की सेंट जेवियर्स स्कूल पिपरौली बड़ागांव के होनहार पूर्व छात्र रोहित जायसवाल ने।साधारण परिवेश से निकलकर अपनी अथक मेहनत, अनुशासन और अटूट आत्मविश्वास के बल पर उन्होंने भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) में ग्रेड अधिकारी बनकर न सिर्फ अपने परिवार, बल्कि पूरे विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन कर दिया।अपनी ऐतिहासिक सफलता के बाद रोहित जायसवाल जब अपने विद्यालय सेंट जेवियर्स पहुंचे तो परिसर तालियों की गूंज से गूंज उठा।गुरुजनों ने उनके माता-पिता सहित उन्हें पुष्पगुच्छ अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान के साथ स्वागत किया, वहीं विद्यार्थियों ने अपने प्रेरणास्रोत को सामने देखकर उत्साह से उनका अभिनंदन किया। यह पल विद्यालय परिवार के लिए भावुक और गर्व से भरा हुआ था।इस सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए होनहार रोहित जायसवाल ने सफलता का ऐसा मंत्र बताया, जिसने विद्यार्थियों के मन में नई उम्मीद जगा दी। उन्होंने कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता।

रोज़ाना की नियमित पढ़ाई, सही समय प्रबंधन, आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और निरंतर अभ्यास ही हर बड़ी परीक्षा की असली कुंजी है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो तो परिस्थितियां कभी भी मंजिल का रास्ता नहीं रोक सकतीं।

बलिया देवरिया मऊ जिलों में अपनी ज्ञान की गंगा प्रवाह करने में विख्यात सेंट जेवियर्स पिपरौली के डायरेक्टर डॉक्टर जे.आर. मिश्र ने कहा कि रोहित की सफलता सेंट जेवियर्स परिवार के लिए गौरव का स्वर्णिम अध्याय है। उन्होंने कहा कि विद्यालय हमेशा से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ संस्कार,अनुशासन और व्यक्तित्व निर्माण पर विशेष बल देता रहा है। आज रोहित की उपलब्धि इस बात का जीवंत प्रमाण है कि सही मार्गदर्शन और कठिन परिश्रम मिलकर असंभव को भी संभव बना देते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि रोहित की यह उपलब्धि आने वाले वर्षों तक हजारों विद्यार्थियों को बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने की प्रेरणा देती रहेगी। प्रिंसिपल शीला मिश्रा ने कहा कि रोहित शुरू से ही गंभीर, अनुशासित और पढ़ाई के प्रति समर्पित छात्र रहे हैं। उनकी मेहनत, विनम्रता और सीखने की ललक उन्हें अन्य विद्यार्थियों से अलग पहचान दिलाती थी। आज उनकी सफलता पूरे विद्यालय परिवार के लिए गर्व का विषय है और हर छात्र को यह संदेश देती है कि दृढ़ निश्चय के सामने कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होता।

सहायक प्रिंसिपल तनवीर फातिमा ने कहा कि रोहित ने यह साबित कर दिया कि सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि लगातार मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास से मिलती है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे भी रोहित की तरह अपने लक्ष्य तय करें,

अनुशासन के साथ तैयारी करें और अपने माता-पिता, गुरुजनों तथा विद्यालय का नाम रोशन करें। इस सम्मान समारोह के अंत में विद्यालय परिवार ने रोहित जायसवाल सहित उनके माता-पिता को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

यह सम्मान समारोह केवल एक विद्यार्थी की सफलता का उत्सव नहीं, बल्कि हर उस सपने का सम्मान था जो मेहनत और हौसले के दम पर एक दिन हकीकत बन जाता है।

सपा नोएडा महानगर ने वृक्षारोपण के साथ संत शिरोमणि लक्खी शाह बंजारा जी की जयंती श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर द्वारा चलाए जा रहे पीडीए वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत शनिवार को प्रथम चरण में सेक्टर-35 स्थित मोरना राजकीय प्राथमिक विद्यालय में अंबेडकर वाहिनी के महानगर अध्यक्ष हरपाल सिंह के नेतृत्व में वृक्षारोपण किया गया। इसके पश्चात सेक्टर-115, सोरखा गांव में अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के महानगर अध्यक्ष नितिन कुमार के नेतृत्व में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी अवसर पर संत शिरोमणि लक्खी शाह बंजारा जी की जयंती भी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा कि संत शिरोमणि लक्खी शाह बंजारा जी का जीवन त्याग, सेवा और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। उनके आदर्श समाज को एकता और मानवता का संदेश देते हैं। प्रदेश सचिव सुनील चौधरी ने कहा कि वृक्षारोपण केवल अभियान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का संकल्प है। महानगर महासचिव विकास यादव ने कहा कि लक्खी शाह बंजारा जी का जीवन हमें अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर समाज सेवा के लिए प्रेरित करता है। अंबेडकर वाहिनी के महानगर अध्यक्ष हरपाल सिंह ने कहा कि हर व्यक्ति को अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनके संरक्षण का भी संकल्प लेना चाहिए। अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के महानगर अध्यक्ष नितिन कुमार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और प्रत्येक नागरिक को इसमें अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने मोरना सेक्टर-35 स्थित राजकीय विद्यालय का निरीक्षण कर विद्यालय के शौचालयों पर ताला लगे होने, चारों ओर फैली गंदगी, पेयजल एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं की कमी पर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्वच्छ एवं सुरक्षित शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। उन्होंने इस संबंध में बेसिक शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखकर तत्काल आवश्यक कार्रवाई की मांग की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ. आश्रय गुप्ता, सुनील चौधरी, विकास यादव, गौरव कुमार यादव, अमित बसोया, रामवीर यादव, राणा मुखर्जी, हरपाल सिंह, बबलू चौहान, राघवेंद्र दुबे, मुकेश प्रधान, महेश कुमार जाटव, निरोधी सिंह, रविंद्र गौतम, अरुण कुमार, सत्यपाल सिंह, रेखा विश्वकर्मा, टीटू सलारपुर, नितिन वाल्मीकि, संतोष चौटाला, दीपक छजलाना, अर्जुन पूरन सिंह, अजय वाल्मीकि, प्रमोद, जितेन वाल्मीकि, संजय वाल्मीकि, अरुण वाल्मीकि, मीरा देवी ,शादाब , इंद्रजीत ,एवं बृजेश राजोरिया सहित अनेक समाजवादी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पति को बाथरूम में दफनाया,और वहीं नहाती धोती भी थी- अब घूंघट से मुंह छिपाती, आगरा में पत्नी जेल भेजी गई

आगरा। यूपी के आगरा में पति को बाथरूम में दफनाने वाली पत्नी को शनिवार शाम 5 बजे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। जेल जाते वक्त रूबी घूंघट में मुंह छिपाती रही। उसने करीब एक फीट लंबा घूंघट कर रखा था। पुलिस पूछताछ में रूबी ने बताया कि पति सुरेंद्र शराब पीकर उसे मारता-पीटता था। वह 16 साल से परेशान थी। इसलिए उसने पति के खाने में नींद की गोलियां पीसकर मिला दीं। रात करीब 3 बजे उठी तो देखा कि उनकी सांसें नहीं चल रही थीं। उसने बताया-सुबह उसने सास और बच्चों को जेठ के साथ भेज दिया। बाथरूम में गड्ढा खोदा। शव घसीटकर ले गई और गाड़ दिया। 400 रुपए में मिट्टी मंगाई। मिट्टी से जगह बराबर की। अगले दिन मजदूर बुलाकर वहां सीमेंट का फर्श बनवा दिया। राजस्थान के भरतपुर के रहने वाले सुरेंद्र कुमार शर्मा (44) सिकंदरा के दहतोरा स्थित रेणुका धाम कॉलोनी में रहते थे। उनकी शादी साल 2010 में रूबी से हुई थी। रूबी इटावा की रहने वाली है। उनकी दो बेटियां रिद्धी (13) और सिद्धी (9) हैं। सुरेंद्र के साथ उनकी मां कमला भी रहती थीं। उन्हें आंखों से कम दिखाई देता है। उनके पिता राधेश्याम शर्मा शिक्षक थे। उनकी कुछ साल पहले मौत हो चुकी है। सुरेंद्र 18 मई से लापता थे। 26 मई को पत्नी रूबी ने थाने में उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रूबी लगातार घरवालों और पड़ोसियों से पति के लापता होने की बात कहती रही। पुलिस शुक्रवार (3 जुलाई) को सुरेंद्र के भाई की सूचना पर उसके घर पहुंची। वहां पुलिस को रूबी का व्यवहार संदिग्ध लगा। सुरेंद्र इसके बाद पुलिस ने घर की जांच कराई, तो बाथरूम की फर्श पर संदेह हुआ। इसके बाद बाथरूम की खुदाई कराई गई, जहां से सुरेंद्र का कंकाल मिला। पुलिस ने पति की हत्या के आरोप में रूबी को गिरफ्तार कर लिया। रूबी ने पुलिस को बताया- मेरी शादी साल-2010 में हुई थी। मैं इटावा की रहने वाली हूं। हमारी दो बेटियां रिद्धी और सिद्धी हैं। मेरी शादी ही झूठ की बुनियाद पर हुई थी। शादी के समय बताया गया था कि सुरेंद्र पढ़ा-लिखा है। अच्छी नौकरी करता है। लेकिन, शादी के बाद पता चला कि वो कुछ नहीं करता। मैंने अपना भाग्य मानते हुए उसको भी स्वीकार कर लिया। लेकिन, सुरेंद्र शराब पीने का आदी था। वो शराब पीकर मुझसे मारपीट करता था। बच्चे होने के बाद भी मैं उसकी हरकतों को सहती आ रही थी। हत्या से पहले भरतपुर में हुआ था झगड़ाः-हत्या से 2 दिन पहले 16 मई को सुरेंद्र भरतपुर में अपनी रिश्तेदारी में गया था। वहां पर भी मेरा उससे झगड़ा हो गया था। मेरे रिश्तेदारों ने पुलिस केस करने की बात कही थी। इसके बाद सुरेंद्र ने रिश्तेदारों को समझाने के लिए 17 मई को मुझे फिर से भरतपुर भेजा।

लेकिन, वहां पर मेरे साथ भी बुरा व्यवहार हुआ। पति और बच्चों के साथ मुझे भी जेल भेजने की धमकी दी गई। इससे मैं आहत थी। मेरे मन में पति के व्यवहार को लेकर बहुत गुस्सा था। खाने में मिलाई नींद गोलियां, डेढ़ फीट गड्?ढा खोदाः-रूबी ने बताया- मेरा पति और सास नींद की गोलियां खाती थीं। मैंने पति के खाने में नींद की गोलियां पीसकर मिला दीं। खाना खाकर पति और बच्चे सब एक कमरे में सो गए। रात करीब 3 बजे मैं उठी। मैंने देखा कि पति की सांसें थम चुकी हैं। मैंने रात में बच्चों को उठाकर दूसरे कमरे में सुला दिया। पति की लाश को उसी कमरे में छोड़ दिया और बाहर से दरवाजा बंद कर दिया। अक्सर पति सुबह देर से उठता था। ऐसे में मैंने बच्चे और सास को सुबह ही अपने जेठ को फोन कर उनके साथ भेज दिया। सुबह जब सब लोग घर से चले गए तो घर का दरवाजा बंद किया। इसके बाद बाथरूम में जाकर करीब डेढ़ फीट गड्?ढा खोदा। फिर पति की लाश का हाथ पकड़कर घसीटते हुए उसे बाथरूम में ले गई। वहां लाश को गड्ढे में डाल दिया। 400 रुपए में मंगाई थी मिट्?टीः-पति को दफनाने के लिए मैंने एक ठेकेदार से बाथरूम के भराव के लिए 400 रुपए में मिट्टी मंगाई थी। मिट्?टी घर के गेट पर डलवाई। इसके बाद मैंने खुद पति की लाश पर मिट्?टी डाली। उसको समतल किया। अगले दिन इलाके से दो मजूदरों को बुलाया। पति की लाश पर पक्का फर्श बनाने के लिए 1200 रुपए में ठेका दिया। 2 सीमेंट की बोरी मंगाकर प्लास्टर करा दिया। मजदूरों को भी नहीं पता था कि जहां वो फर्श बना रहे, उसके नीचे लाश है। बच्चों के पूछने पर झूठ बोलती थीः-पुलिस ने जब रूबी से पूछा कि क्या उसे पति की हत्या का पछतावा है? उसने कहा- मैं 16 साल में पति की प्रताड़ना झेलते हुए भर चुकी थी। उस दिन जब पति की हरकत की वजह से मेरे बच्चों को जेल जाने की धमकी मिली, तो मेरा धैर्य जवाब दे गया। पति की हत्या के बाद मेरी आंखों में आंसू थे। जब मेरी बेटियां पूछती थीं कि पापा कहां गए? तो मैं उनसे झूठ बोलती थी। जब मैं उस बाथरूम में जाती थी, तो उसको रह-रह कर उस रात की याद आती थी। लेकिन, मैं अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के लिए सबसे झूठ बोलती रही। 45 दिन बाद जेठ का बताई हकीकतः-पति की हत्या के बाद रूबी ने सबको गुमराह करने का प्रयास किया। उसने अपनी सास और जेठ अनिल को बताया कि अनबन होने के बाद पति घर से चले गए हैं। इतना ही नहीं, पति की गुमशुदगी दर्ज कराने थाने तक गई। मोहल्ले के लोगों के सामने पति की याद में रोने का नाटक भी किया। लेकिन, सुरेंद्र के बडे भाई अनिल शर्मा को शक हो गया था। ससुर की 64 हजार रुपए पेंशन आती थी। एटीएम सुरेंद्र के पास था। हत्या के बाद भी खाते से ट्रांजेक्शन होने के बाद जेठ अनिल को शक हुआ। शुक्रवार (3 जुलाई) को अनिल ने रूबी से पूछा कि रोने से परेशानी दूर नहीं होगी। कोई बात है, तो मुझे बता दो। तू फंस रही है तो मुझे बता देष्ठ मैं तुझे बचा लूंगा। तेरे ऊपर आंच नहीं आने दूंगा। इस पर रूबी पिघल गई और पति को दफनाने का सच बता दिया। मजदूरों ने 20 मिनट में फर्श तोड़ाः-शुक्रवार दोपहर 12 बजे जेठ ने पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस टीम पहुंची और 5 मजदूर बुलवाए। मजदूरों ने 20 मिनट में फर्श तोड़ा। इसके बाद गड्ढा खोदा। देखा तो लाश गल चुकी थी, सिर्फ कंकाल बचा था। मिस्त्री बोला- मुझे पता नहीं था कि जहां फर्श बनाई, उसके नीचे शवः-लाश के ऊपर फर्श बनाने वाले मिस्त्री रवि ने बताया- मैं पहले भी उस गली में मकान बना चुका हूं। घटना वाले दिन मैं बिचपुरी में काम कर रहा था। दोपहर दो बजे मेरे पास फोन आया कि पड़ोस में एक काम करना है। मैंने कहा कि शाम को आकर काम देखेंगे। शाम 6:30 बजे मौके पर पहुंचा। देखा तो एक महिला बाल्टियों में मलबा भरकर कमरे के अंदर डाल रही थी। उसने उसी समय काम करने को कहा, लेकिन मैंने अगले दिन आने की बात कही। उसने बताया- अगले दिन सुबह मैं एक मजदूर के साथ पहुंचा। महिला ने मुझे 500 रुपए दिए। सीमेंट की बोरी मंगवाई। बालू पहले से ही सामने रखी हुई थी। इसके बाद मैंने बाथरूम में फर्श बनाई। काम के दौरान महिला ने मुझसे कहा कि पति घर में तोड़फोड़ करके चले गए हैं।

राष्ट्र सेविका समिति के प्रवीण वर्ग का प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरांत शालिनी सिंह ने पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र से लिया आशीर्वाद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। राष्ट्र सेविका समिति के प्रवीण वर्ग का प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत राष्ट्र सेविका समिति की कार्यकर्ता और नोएडा सिटीजन फोरम की कार्यकारी अध्यक्षा शालिनी सिंह ने शनिवार को देश के वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र से शिष्टाचार भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री मिथलेश तिवारी से भी आत्मीय मुलाकात हुई। बैठक के दौरान राष्ट्र निर्माण, सामाजिक समरसता, महिला सशक्तिकरण तथा राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से समाज में संस्कार, सेवा एवं राष्ट्रभक्ति के मूल्यों के प्रसार पर सार्थक चर्चा हुई। इस अवसर पर कलराज मिश्र ने कहा कि राष्ट्र सेविका समिति केवल व्यक्तित्व निर्माण का ही नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का भी एक सशक्त माध्यम है। प्रशिक्षण वर्गों से प्राप्त संस्कार, अनुशासन और सेवा की भावना को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना प्रत्येक सेविका का दायित्व है। समाज और राष्ट्रहित में निरंतर कार्य करने वाले युवाओं की भूमिका आज पहले से अधिक महत्वपूर्ण है। वहीं शालिनी सिंह ने कहा कि प्रवीण वर्ग के प्रशिक्षण से मुझे संगठन, अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्रसेवा के अनेक महत्वपूर्ण आयामों को सीखने का अवसर मिला। मेरा प्रयास रहेगा कि प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान, संस्कार और अनुभव का लाभ नोएडा सहित अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे तथा सेवा, समर्पण और राष्ट्रभावना के साथ समाज के बीच निरंतर कार्य करती रहूँ।

उत्तर प्रदेश आम महोत्सव-2026 का हुआ शानदार समापन, 180 से अधिक विजेताओं को बांटे गए पुरस्कार

800 प्रजातियों के 3000 से अधिक नमूनों का प्रदर्शन, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शक बने मलिहाबाद के मोहम्मद इकबाल अहमद, योगी सरकार में आम को वैश्विक बाजार, किसानों को मिल रही नई तकनीकः उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर, लखनऊ में चल रहे तीन दिवसीय 'उत्तर प्रदेश आम महोत्सव-2026' का रविवार को समापन हो गया। समापन दिवस पर मुख्य अतिथि प्रदेश के उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने 180 से अधिक विजेताओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। समापन दिवस पर उद्यान मंत्री ने आम की विभिन्न प्रजातियों की 07 श्रेणियों में एवं 56 वर्गों की प्रतियोगिता में 51 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 147 पुरस्कार प्रदान किए। आम आधारित संरक्षित उत्पादों की प्रतियोगिता के 11 वर्गों के 19 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 33 पुरस्कार तथा आम पकवान की प्रतियोगिता के 3 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 3 पुरस्कार दिए गए। आम के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्श का पुरस्कार मोहम्मद इकबाल अहमद, प्रो. मेसर्स अवध नर्सरी, मलिहाबाद, लखनऊ को चौंसा प्रजाति के प्रदर्शन के लिए दिया गया। सर्वाधिक पुरस्कार विजेताओं में 20 पुरस्कार मोहम्मद इकबाल अहमद को, 17 पुरस्कार मोहम्मद अब्दुल सलीम, जैद नर्सरी, मलिहाबाद को तथा 14 पुरस्कार सुरेश चंद्र शुक्ला, गोमती नगर, लखनऊ को प्राप्त हुए। प्रदर्शनी में सर्वाधिक 190 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु सुरेश चंद्र शुक्ला को प्रथम, 92 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु उपेन्द्र सिंह, अवध आम उत्पादक सहकारी संघ, माल, लखनऊ को द्वितीय तथा 24 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु सूर्य मणि यादव, जौनपुर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। 08 वर्ष से 12 वर्ष के बच्चों की आम खाने की प्रतियोगिता में रुचिर शुक्ला पुत्र कर्नल रिषभी शुक्ला, लखनऊ को प्रथम, अरित्ता सिंह पुत्री डॉ. धीरेन्द्र सिंह, लखनऊ को द्वितीय तथा दीपांशु यादव पुत्र रमेश कुमार यादव, बस्ती को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। महोत्सव में आम की लगभग 800 प्रजातियों के नमूने प्रदर्शित किए गए। प्रदेश में आम की सुप्रसिद्ध दशहरी, लंगड़ा, चौंसा, गौरजीत, लखनऊ सफेदा, रटौल, आम्रपाली प्रजातियों के साथ-साथ अवध अभया, अवध समृद्धि, सुंदरजा, वनराज, टॉमी एटकिन्स, सेंसेशन, अरुणिका, अम्बिका आदि रंगीन प्रजातियां भी आकर्षण का केंद्र रहीं। महोत्सव में आम की विभिन्न प्रजातियों में 1390 प्रतिभागियों द्वारा 2667 प्रदर्श नमूने तथा आम के संरक्षित पदार्थ वर्ग में 111 प्रतिभागियों द्वारा 365 नमूने प्रदर्शित किए गए। इस प्रकार कुल 1501 प्रतिभागियों द्वारा 3032 नमूने प्रदर्शित किए गए, जो विगत वर्ष की तुलना में लगभग 06 प्रतिशत अधिक रहे। इसके अतिरिक्त हाईटेक नर्सरियों में उत्पादित कमल के पौधे, ड्रैगनफ्रूट एवं खजूर के पौधे, आम की आइसक्रीम, आम जलेबी, आम पना, आम हलवा, आम रसगुल्ला आदि के स्टॉल प्रदर्शनी में आकर्षण का केंद्र रहे। आम महोत्सव-2026 के अंतिम दिवस में किसानों, उद्यमियों, महिला स्वयं सहायता समूहों, छात्रों के समक्ष खाद्य प्रसंस्करण के महत्व एवं रोजगार सृजन में योगदान विषय पर तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। सत्र में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना एवं उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 में प्रदत्त सुविधाओं, डिहाइड्रेशन एवं परंपरागत विधि से आम सुखाने, फर्मेंटेशन, इनोवेशन फॉर एंटरप्रेन्योरशिप, फूड सेफ्टी, मूल्य संवर्धन, प्रसंस्कृत उत्पादों के विपणन, शहद प्रसंस्करण तथा स्वरोजगार हेतु सी.आई.सी. के योगदान आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। किसानों को अवगत कराया गया कि पीएमएफएमई योजना के अंतर्गत लघु एवं सूक्ष्म उद्योग की स्थापना पर 35 प्रतिशत अधिकतम

1 लाख रुपए एवं उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की स्थापना पर 35 प्रतिशत अधिकतम 5 करोड़ रुपए का अनुदान दिया जा रहा है।उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश का उद्यान विभाग किसानों की आय बढ़ाने और उत्तर प्रदेश के आम को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए लगातार नवाचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के किसानों की आय दोगुनी करने के संकल्प को उत्तर प्रदेश सरकार ने नवाचार, आधुनिक तकनीक, निर्यात संवर्धन और मूल्य संवर्धन के माध्यम से धरातल पर उतारा है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश का आम 30 से अधिक देशों में निर्यात किया जा रहा है। जेवर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के विकसित होने से निर्यात लागत में कमी आएगी और कार्गो विमानों से सीधे विश्व बाजारों तक आम पहुंचेगा। आम महोत्सव-2026 का आयोजन उद्यान विभाग, खाद्य प्रसंस्करण विभाग, मंडी परिषद, पर्यटन एवं संस्कृति विभाग, लखनऊ विकास प्राधिकरण, एन.एच.आर.डी.एफ., केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान रहमानखेड़ा एवं जिला प्रशासन के समन्वित प्रयासों से किया गया। महोत्सव में आम उत्पादक किसान, समितियां, स्वयं सहायता समूह, पैक हाउस, फूड प्रोसेसर, निर्यातक व्यापारी, नर्सरी मालिक, वित्तीय सहायता प्रदाता, अवसंरचना तथा रसद प्रदाता, मशीनरी एवं उपकरण आपूर्तिकर्ता, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक आदि ने प्रतिभाग किया। सीआईएसएच, रहमानखेड़ा, लखनऊ, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उद्यान विभाग के सहारनपुर, बस्ती, झांसी (बरुआसागर) एवं लखनऊ (मलिहाबाद) में स्थापित औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्रों तथा प्रगतिशील बागवानों द्वारा अपने-अपने संस्थानों/बागों में उगाई जाने वाली प्रजातियों का प्रदर्शन किया गया। उत्तराखंड, मध्यप्रदेश आदि राज्यों के उद्यान विभाग एवं कृषकों ने भी प्रतिभाग किया। समापन अवसर पर निदेशक उद्यान भानु प्रकाश राम ने सभी गणमान्य व्यक्तियों एवं बागवानों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान विधायक प्रभात वर्मा एवं पूजा पाल, एमएलसी पवन सिंह चौहान, अपर मुख्य सचिव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण बी.एल. मीणा, विशेष सचिव राज कमल यादव, वित्त नियंत्रक संजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक डॉ. सर्वेश कुमार, संयुक्त निदेशक डॉ. राजीव कुमार वर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश आम महोत्सव-2026 का उद्घाटन 03 जुलाई, 2026 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किया गया था। इस महोत्सव में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही एवं कृषि राज्य मंत्री बलदेव सिंह औलख भी अतिथि के रूप में उपस्थित रहे थे।

मारकुंडी विकास की दिशा में

50 एकड़ में बनेगा औद्योगिक क्षेत्र बनेगा, सोनभद्र में सीएम विकसित करेगी सरदार वल्लभभाई पटेल रोजगार क्षेत्र

सोनभद्र। सोनभद्र जिले में युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए एक नया औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जाएगा।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सोनभद्र के मारकुंडी में 50 एकड़ भूमि पर 'सरदार वल्लभभाई पटेल रोजगार एवं औद्योगिक क्षेत्र'स्थापित होगा।जिला प्रशासन ने इसके लिए भूमि का चयन कर प्रस्ताव शासन को भेज दिया है। इस परियोजना का उद्देश्य युवाओं को विश्वस्तरीय कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करना और उन्हें एक ही मंच पर रोजगार व स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। औद्योगिक क्षेत्र के विकसित होने से हजारों युवाओं को रोजगार मिलेगा,जिससे उन्हें पलायन नहीं करना पड़ेगा और सोनभद्र की औद्योगिक पहचान को भी नई दिशा मिलेगी। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने बताया कि इस अत्याधुनिक औद्योगिक क्षेत्र में स्किल डेवलपमेंट सेंटर,औद्योगिक इकाइयां और उत्पादों के आउटलेट बनाए जाएंगे।पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुए हरित आवरण भी सुनिश्चित किया जाएगा। यहां युवाओं को आईटी, एआई, रोबोटिक्स, मैन्युफैक्चरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स,ऑटोमोबाइल, ऊर्जा, लॉजिस्टिक्स और हॉस्पिटैलिटी जैसे आधुनिक क्षेत्रों में उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाएगा।प्रशिक्षण के बाद युवाओं को औद्योगिक क्षेत्र में ही रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा।जिलाधिकारी ने यह भी बताया कि इस परियोजना से स्थानीय एमएसएमई, स्टार्टअप और नए उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। इससे जिले में निवेश, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। औद्योगिक क्षेत्र के विकास के साथ-साथ उद्योगों के लिए सुगम आवागमन भी सुनिश्चित किया जाएगा। गुरमा मोड़ से औद्योगिक क्षेत्र के बीच 15.99 करोड़ रुपये की लागत से सड़क का निर्माण कराया जाएगा।

इस सड़क के निर्माण से उद्योगों को कच्चा माल और तैयार माल की डिलीवरी में आसानी होगी, जिससे परिवहन लागत घटेगी और उद्योगों की प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ेगी। जिलाधिकारी ने बताया कि इस औद्योगिक क्षेत्र को प्लग-एंड-प्ले इंफ्रास्ट्रक्चर नीति के तहत विकसित किया जाएगा।

यहां बिजली, पानी,सड़क, सीवरेज और इंटरनेट जैसी सभी बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ उद्योगों को तेजी से स्थापित करने के लिए सभी जरूरी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।यहां उद्यमियों के लिए तैयार फैक्ट्री शेड्स उपलब्ध जिससे वे अपनी मशीनें लगाकर तुरंत उत्पादन शुरू कर सकें। बताया कि यह परियोजना सोनभद्र को पूर्वांचल एवं विंध्य क्षेत्र के प्रमुख औद्योगिक,कौशल विकास एवं रोजगार केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम सिद्ध होगी।

आटा पिसाई के दौरान ट्रैक्टर ने युवक को कुचला, इलाज के दौरान दम तोड़ा

सोनभद्र। बभनी थाना क्षेत्र में ट्रैक्टर बैक करते समय हुए हादसे में गंभीर रूप से घायल 18 वर्षीय युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। आटा पिसाई के लिए ट्रैक्टर लगवाते समय हुए

इस हादसे के बाद गांव में शोक का माहौल है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी हैं। ट्रैक्टर बैक करते समय हुआ हादसा'-शनिवार रात बभनी थाना क्षेत्र के चैनपुर गांव निवासी 18 वर्षीय धीरज पुत्र रामजन्म आटा पिसाई के लिए ट्रैक्टर लगवा रहा था। इसी दौरान ट्रैक्टर बैक करते समय अनियंत्रित हो गया और धीरज उसकी चपेट में आ गया। गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया गयाः-हादसे के बाद मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने गंभीर रूप से घायल धीरज को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बभनी पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार शुरू किया। जिला अस्पताल में तोड़ा दम-धीरज की हालत नाजुक होने पर चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहां उपचार के दौरान रविवार को उसकी मौत हो गई। परिजनों में मचा कोहराम-युवा बेटे की मौत की खबर मिलते ही परिवार में चीख-पुकार मच गई। गांव में भी शोक की लहर दौड़ गई और बड़ी संख्या में लोग पीड़ित परिवार को ढांढस बंधाने पहुंचे। पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया शव-अस्पताल से मिले मेमो के आधार पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा की कार्रवाई पूरी की और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हादसे की जांच में जुटी पुलिस-पुलिस ने बताया कि घटना की जांच शुरू कर दी गई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

आदिवासियों का अनादर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा संदीप मिश्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। महुआवारी में प्रस्तावित विस्थापन को लेकर चल रहे 'महुआवारी बचाओ अभियान' के तहत रविवार को समृद्धी जन कल्याण संस्थान के नेतृत्व में एक जनसभा आयोजित की गई। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण शामिल हुए और सम्मानजनक पुनर्वास की मांग को लेकर एकजुटता दिखाई। कार्यक्रम में किसान नवजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा, ने ग्रामीणों को संबोधित किया। संदीप मिश्रा ने कहा कि यदि प्रभावित हमारे परिवारों को उनके अधिकार और आर एंड आर नीति के तहत उचित पुनर्वास नहीं दिया गया तो जल्द ही जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव किया जाएगा। उन्होंने कहा कि किसी भी परिवार के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा और उनके हक की लड़ाई पूरी मजबूती से लड़ी जाएगी। समाजसेवी विजय प्रताप सिंह ने ग्रामीणों को भरोसा दिलाते हुए कहा कि उन्हें न्याय दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा तथा उनकी आवाज प्रशासन तक मजबूती से पहुंचाई जाएगी। इस दौरान ग्रामीणों ने भी अपनी समस्याएं रखते हुए कहा कि प्रस्तावित पुनर्वास स्थल पर पानी, बिजली, सड़क और अन्य आवश्यक सुविधाओं का अभाव है। उन्होंने प्रशासन से सम्मानजनक पुनर्वास सुनिश्चित करने की मांग की। कार्यक्रम में समृद्धी जन कल्याण संस्थान की ओर से सिद्धार्थ गुप्ता, जावेद अहमद, महावीर सिंह, अभिनव राजपूत, के.पी. सोनकर, राजू, वाजिद एवं विजय कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभा में सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों ने भाग लेकर अपने अधिकारों की आवाज बुलंद की।

'रकिंग',पीठ पर वजन लेकर चलने-दौड़ने के 10 फायदे, न करें ये गलतियां, बरतें 8 जरूरी सावधानियां

जयपुर। फिट रहने के लिए लोग जिम जाते हैं। वॉकिंग, जॉगिंग, रनिंग जैसी एक्सरसाइज करते हैं। इन सब अलग-अलग वर्कआउट के बीच आजकल एक नई फिटनेस एक्टिविटी तेजी से पॉपुलर हो रही है, जिसे 'रकिंग' कहते हैं। इसमें व्यक्ति अपनी पीठ पर वजन वाला बैग लेकर चलता या दौड़ता है। सेना के जवानों की ट्रेनिंग में लंबे समय से इस्तेमाल होने वाली यह तकनीक अब आम लोगों के बीच भी फिटनेस ट्रेंड बन रही है। एक्सपर्ट कहते हैं कि रकिंग से सामान्य वॉकिंग, जॉगिंग या रनिंग की तुलना में ज्यादा कैलोरी बर्न होती है, मांसपेशियां मजबूत होती हैं और स्टैमिना बढ़ता है। खास बात यह है कि इसके लिए किसी महंगे उपकरण या जिम की जरूरत नहीं है। इसलिए आज रकिंग पर विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- क्या रकिंग सभी के लिए सुरक्षित है? रकिंग में कितना वजन लेकर चलना चाहिए? रकिंग करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. नितिन बजाज, कंसल्टेंट, फिजियोथेरेपी, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- रकिंग क्या है? जवाब- रकिंग एक फिटनेस एक्सरसाइज है। इसे पॉइंटर्स से समझिए- रकिंग में व्यक्ति अपनी पीठ पर वजनदार बैग (रकसैक) लेकर पैदल चलता है। यह सामान्य वॉकिंग की तुलना में ज्यादा चैलेंजिंग होती है क्योंकि एक्स्ट्रा वेट के कारण शरीर को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। इससे स्टैमिना, मसल स्ट्रेंथ और कार्डियोवस्कुलर फिटनेस बेहतर हो सकती है। सवाल- रकिंग क्यों इतनी पॉपुलर हो रही है? जवाब- इसके पीछे ये संभावित कारण हो सकते हैं-पहला कारण तो ये कि ये सस्ता और आसान उपाय है। कोई भी इसे कर सकता है। इसके लिए जिम जाने या कोई खास मशीन खरीदने की जरूरत नहीं है। रकिंग से कार्डियो और स्ट्रेंथ ट्रेनिंग, दोनों होते है। यह एक तरह की फुल बॉडी एक्सरसाइज है। सवाल- रकिंग के हेल्थ बेनिफिट्स क्या हैं? जवाब- ये बॉडी स्ट्रेंथ और स्टैमिना बढ़ाने वाली इफेक्टिव एक्सरसाइज है। इसमें चलने के साथ अतिरिक्त वजन उठाने से शरीर की कई मांसपेशियां एक साथ काम करती हैं, जिससे फिटनेस बेहतर होती है। फायदे-मसल्स और ग्रिप स्ट्रेंथ बढ़ती है। हार्ट-लंग्स की फिटनेस बढ़ती है। हड्डियां मजबूत होती हैं। बोन डेंसिटी बढ़ती है। पोस्चर, बैलेंस बेहतर होता है।ज्यादा कैलोरी बर्न होती है। स्टैमिना, एंड्यूरेंस बढ़ता है। मेंटल हेल्थ बेहतर होती है। कोर स्टेबिलिटी बेहतर होती है। स्ट्रेस, एंग्जाइटी कम होती है। सवाल- क्या सामान्य वॉक की तुलना में रकिंग से ज्यादा कैलोरी बर्न होती है? जवाब- हां, रकिंग के दौरान शरीर को अतिरिक्त वजन उठाना पड़ता है। इसलिए सामान्य वॉकिंग की तुलना में इसमें ज्यादा ऊर्जा खर्च होती है। वजन, चलने की गति और दूरी के आधार पर रकिंग से अधिक कैलोरी बर्न हो सकती है। हालांकि सटीक कैलोरी खर्च व्यक्ति की उम्र, वजन और फिटनेस लेवल पर निर्भर करता है। सवाल- क्या रकिंग दौड़ने से बेहतर है? जवाब- यह व्यक्ति के फिटनेस गोल पर निर्भर करता है। इसे ऐसे समझिए- दौड़ना, कार्डियो और कैलोरी बर्निंग के लिए इफेक्टिव है, जबकि रकिंग कार्डियो के साथ मसल स्ट्रेंथ और स्टैमिना बढ़ाने में भी मददगार है। जिन लोगों को दौड़ने में घुटनों या जोड़ों पर ज्यादा दबाव महसूस होता है, उनके लिए रकिंग एक अच्छा विकल्प हो सकती है। दोनों के अपने-अपने फायदे हैं। सवाल- क्या रकिंग जिम का विकल्प हो सकती है? जवाब- रकिंग फिटनेस बनाए रखने का एक अच्छा तरीका है। लेकिन यह पूरी तरह जिम का विकल्प नहीं है। यह कार्डियो और स्ट्रेंथ बढ़ाने में मदद करती है, जबकि मसल्स बनाने और एडवांस स्ट्रेंथ ट्रेनिंग के लिए जिम की जरूरत पड़ सकती है।

रकिंग से स्टैमिना, मसल स्ट्रेंथ और कैलोरी बर्निंग बढ़ती है। लेकिन गलत तकनीक या जरूरत से ज्यादा वजन कमर, घुटनों और कंधों पर अनावश्यक दबाव डाल सकता है। इसलिए सावधानी बरतें और अपनी शारीरिक क्षमता का ध्यान रखें। सवाल- रकिंग की शुरुआत कैसे करें?जवाब- रकिंग शुरू करने के लिए सबसे पहले एक आरामदायक बैग चुनें और उसमें हल्का वजन रखें। शुरुआत 15-20 मिनट या 1-2 किलोमीटर की वॉक से करें। शरीर के अभ्यस्त होने पर धीरे-धीरे वजन, दूरी और समय बढ़ाएं। सवाल- कितना वजन लेकर चलना सुरक्षित माना जाता है? जवाब- अपने बॉडी वेट के 5-10फीसदी के बराबर वजन से शुरुआत करना सुरक्षित माना जाता है। उदाहरण के लिए, अगर किसी का बॉडी वेट 70 किलो है तो वह 3.5 से 7 किलो तक का वजन अपनी पीठ पर लादकर रकिंग कर सकता है। शरीर के अभ्यस्त होने पर वजन धीरे-धीरे बढ़ाया जा सकता है। सवाल- रकिंग बैग को उठाने का सही तरीका क्या है? जवाब- रकिंग बैग में वजन को पीठ के ऊपरी हिस्से के करीब और समान रूप से रखना चाहिए। इससे बैलेंस बना रहता है और कमर व कंधों पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता। बैग की स्ट्रैप्स अच्छी तरह फिट होनी चाहिए, ताकि चलते समय बैग इधर-उधर न हिले। सवाल- रकिंग के दौरान कौन-सी गलतियां नहीं करनी चाहिए? जवाब- रकिंग के समय कुछ सामान्य गलतियां चोट और दर्द का कारण बन सकती हैं। बिना वार्म अप रकिंग न करें। पोस्चर का खास ख्याल रखें। ढीले बैग का इस्तेमाल न करें। शुरू में ज्यादा वेट न उठाएं। दर्द / थकान इग्नोर न करें।

वजन, दूरी अचानक न बढ़ाएं। अनकंफर्टेबल जूतों में न करें। सवाल- रकिंग करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- रकिंग को सुरक्षित और प्रभावी बनाने के लिए सही वजन, सही तकनीक और शरीर की क्षमता का ध्यान रखना जरूरी है। रकिंग से पहले वार्म अप करें। बैग अच्छी तरह फिट करके पहनें।पीठ सीधी, कंधे संतुलित रखें।आरामदायक स्पोर्ट्स शूज पहनें। हल्के वजन से शुरुआत करें। पर्याप्त पानी पीते रहें। वजन और दूरी धीरे-धीरे बढ़ाएं। असहजता होने पर रुक जाएं। सवाल- रकिंग से पहले और बाद में क्या करें? जवाब- रकिंग से पहले शरीर को तैयार करना और बाद में रिकवरी पर ध्यान देना जरूरी है। इसके लिए दी गई कुछ बातों का खास ख्याल रखें- पहले-थोड़ा पहले पानी पिएं। 5-10 मिनट वार्म अप करें। हल्की स्ट्रेचिंग करें। कूल डाउन वॉक करें। बाद में- बैग, जूतों की फिटिंग देखें। स्ट्रेचिंग करें। थकान होने पर रेस्ट करें। शरीर को हाइड्रेट करें। पौष्टिक डाइट लें। सवाल- किन लोगों को रकिंग नहीं करनी चाहिए? जवाब- रकिंग हर किसी के लिए उपयुक्त नहीं होती है। किन्हें किंग नहीं करनी चाहिए? जिन्हें कमर में दर्द है। जिनके घुटनों में दर्द है। जिन्हें स्लिप डिस्क है। जिनकी हाल में सर्जरी हुई है। जिन्हें हार्ट डिजीज है। गर्भवती महिलाएं। जिन्हें ऑस्टियोआर्थराइटिस है। रकिंग से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब सवाल- क्या ज्यादा रकिंग से कमर से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं? जवाब- हां, जरूरत से ज्यादा वजन उठाने, गलत तरीके से चलने या लंबे समय तक रकिंग से कमर, कंधों और पीठ पर दबाव बढ़ सकता है। इससे प्रॉब्लम हो सकती है। इसलिए- संतुलन बनाए रखें। एक साथ बहुत ज्यादा न करें। शरीर पर उसकी क्षमता से ज्यादा बोझ न डालें। सवाल- क्या रकिंग बच्चों के लिए सही है? जवाब- बच्चों को भारी वजन के साथ रकिंग नहीं करनी चाहिए। सवाल- क्या बुजुर्ग लोग रकगि कर सकते हैं? जवाब- हां, स्वस्थ बुजुर्ग हल्के वजन और कम दूरी से रकिंग की शुरूआत कर सकते हैं। हालांकि अगर कोई हेल्थ प्रॉब्लम है तो पहले डॉक्टर से कंसल्ट जरूर करें। सवाल- क्या रोज रकिंग करना सही है? जवाब- हल्की या मीडियम रकिंग रोज की जा सकती है। लेकिन शरीर को पर्याप्त आराम देना भी जरूरी है। अधिक वजन के साथ रोज रकिंग करने से ओवरयूज इंजरी का रिस्क बढ़ सकता है। सवाल- क्या रकिंग वेट लॉस में मददगार है? जवाब- हां, रकिंग में सामान्य वॉकिंग की तुलना में ज्यादा कैलोरी खर्च होती है। इसलिए यह वजन घटाने में मदद कर सकती है। लेकिन इसके साथ संतुलित डाइट भी जरूरी है। सवाल- रकिंग के लिए सही जूते और बैग कैसे चुनें? जवाब- इसके लिए ऐसे स्पोर्ट्स या वॉकिंग शूज चुनें, जो पैरों को अच्छा सपोर्ट और कुशनिंग दें। बैग मजबूत, आरामदायक और अच्छी फिटिंग वाला होना चाहिए, जिसमें वजन शरीर के करीब और संतुलित तरीके से रखा जा सके।

भारत के सबसे युवा क्रिकेटर बने वैभव सूर्यवंशी,डेब्यू कैप मिलते ही रो पड़े

मैनचेस्टर। वैभव सूर्यवंशी भारत के लिए डेब्यू करने वाले सबसे कम उम्र के क्रिकेटर बन गए। उन्होंने 15 साल 99 दिन में पहला मैच खेलकर सचिन तेंदुलकर और शेफाली वर्मा का रिकॉर्ड तोड़ दिया। मैनचेस्टर में तिलक वर्मा ने वैभव को डेब्यू कैप दी। इसके बाद वे भावुक होकर रो पड़े। हालांकि, उनका पहला इंटरनेशनल मैच जीत के साथ यादगार नहीं बन सका।

इंग्लैंड ने 191 रन का टारगेट 4 विकेट खोकर हासिल कर लिया। यह टी-20 में भारत के खिलाफ इंग्लैंड का सबसे बड़ा रनचेज भी रहा। मुकाबले में कई यादगार मोमेंट्स और रिकॉर्ड्स देखने को मिले।

इंडिया बनाम इंग्लैंड मैच के रिकॉर्ड्स-मोमेंट्सः-1. वैभव ने 15 साल 99 दिन की उम्र में डेब्यू किया-वैभव इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू करने वाले भारत के यंगेस्ट क्रिकेटर बने। उन्होंने 15 साल 99 दिन की उम्र में पहला मैच खेला।

वैभव ने शेफाली वर्मा और सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ा। शेफाली ने 15 साल 239 दिन और सचिन ने 16 साल 205 दिन की उम्र में भारत के लिए पहला मैच खेला था।

2. वैभव इंटरनेशनल में डेब्यू करने वाले चौथे सबसे युवा खिलाड़ीः-वैभव इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू करने वाले चौथे सबसे युवा खिलाड़ी बने हैं। जर्सी की निया चार्लोट ग्रेग सबसे कम उम्र में इंटरनेशनल क्रिकेट खेलने वाली क्रिकेटर हैं। उन्होंने 2019 में 11 साल, 40 दिन की उम्र में पहला टी-20 इंटरनेशनल खेला था। उनके नाम सबसे कम उम्र में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज है। पुरुषों में रोमानिया के मारियन गेरासिम सबसे कम उम्र में इंटरनेशनल डेब्यू करने वाले पुरुष क्रिकेटर हैं। उन्होंने 2020 में 14 साल और 16 दिन की उम्र में पहला टी-20 इंटरनेशनल खेला था।

3. वैभव टी-20 डेब्यू पर स्टंप आउट होने वाले पहले भारतीयः-वैभव टी-20 डेब्यू पर स्टंप आउट होने वाले पहले भारतीय बन गए। उन्हें विल जैक्स की गेंद पर जोस बटलर ने स्टंप आउट किया। 3. इंग्लैंड का भारत के खिलाफ सबसे बड़ा रनचेजः-इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ टी-20 में अपना सबसे बड़ा टारगेट चेज किया।

उन्होंने 191 का टारगेट हासिल करते हुए 14 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा। टीम ने 2012 में भारत के खिलाफ मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम पर 178 रन का टारगेट हासिल किया था। 4. रवि बिश्नोई ने एक ओवर में 29 रन दिएः-रवि बिश्नोई टी-20 में सबसे मंहगा ओवर डालने वाले तीसरे भारतीय बने। उन्होंने पारी के 17वें ओवर में 29 रन दिए। बिश्नोई ने इस ओवर में 2 साइड नो बॉल डाली। वहीं बेथेल ने ओवर में 3 छक्के जड़ दिए। टी-20 में भारत के लिए सबसे महंगा ओवर शिवम दुबे ने डाला है। उन्होंने 2020 में न्यूजीलैंड के खिलाफ 34 रन दिए थे। यहां से टॉप मोमेंट्स-1. वैभव को तिलक ने डेब्यू कैप दिया, सूर्यवंशी भावुक हुएः- वैभव को उप कप्तान तिलक वर्मा ने भारतीय कैप दी। सभी खिलाड़ी और सपोर्ट स्टाफ ने तालियां बजाकर उनको बधाई दी। इसके बाद अभिषेक, ईशान, अर्शदीप सहित कई खिलाड़ियों वैभव की पीठ थपथपाई। कैप मिलने के बाद वैभव भावुक हो गए। 2. टॉस के समय श्रेयस की कैप हवा में उड़ीः-टॉस के समय भारतीय कप्तान श्रेयस अय्यर की कैप हवा में उड़ गई। इंग्लैंड के कप्तान हैरी ब्रूक ने सिक्का हवा में उछाला। श्रेयस ने कॉल किया। इसी दौरान तेज हवा से उनकी टोपी उड़कर पीछे जा गिरी। 3. वैभव ने जोफ्रा की गेंद पर पहला इंटरनेशन सिक्स लगायाः-वैभव ने इंटरनेशनल क्रिकेट की सिर्फ तीसरी गेंद पर छक्का जड़ दिया। भारतीय पारी के तीसरे ओवर में जोफ्रा आर्चर पहली बार वैभव के सामने आए। वैभव ने घुटना टेकते हुए पहली ही गेंद को विकेटकीपर के सिर के ऊपर से बाउंड्री लाइन के बाहर भेज दिया। यह उनके इंटरनेशनल करियर का पहला छक्का था। 4. हैरी ब्रूक ने वैभव के जूते का फीता बांधाः-मैच की शुरुआत में वैभव के जूते का फीता खुल गया। इसके बाद इंग्लैंड के कप्तान हैरी ब्रूक उनकी मदद के लिए आए। उन्होंने वैभव के जूते का फीता बांधा। 5. आर्चर ने तिलक का कैच ड्रॉप कियाः-भारतीय पारी के 18वें ओवर में सैम करन की चौथी गेंद पर तिलक वर्मा ने बड़ा शॉट खेला। गेंद डीप बैकवर्ड स्क्वायर लेग पर खड़े जोफ्रा आर्चर के पास गई। उन्होंने डाइव लगाकर कैच तो पकड़ा, लेकिन उन्होंने तुरंत रिप्ले का इशारा किया। रिप्ले में दिखा कि आर्चर के हाथों में जाने पहले गेंद जमीन को छू गई थी। तब तिलक सिर्फ 1 रन बनाकर खेल रहे थे। 6. पारी की पहली गेंद पर सॉल्ट आउटः-अर्शदीप सिंह ने पारी की पहली गेंद पर ही भारत को विकेट दिलाया। इंग्लैंड के ओपनर फिल सॉल्ट बिना खाता खोले पवेलियन लौटे। अर्शदीप की अतिरिक्त उछाल लेती हुई बाहर जाती गेंद पर सॉल्ट ने कट शॉट खेलने का प्रयास किया। गेंद ने बल्ले का बाहरी किनारा लिया और विकेटकीपर ईशान किशन के दस्तानों में चली गई। 7. बिश्नोई ने 3 बार साइड लाइन नो बॉल डालीः-रवि बिश्नोई ने मैच में अपनी पहली गेंद ही नो बॉल डाली।

रनअप के दौरान उनका पैर साइड लाइन के बाहर चला गया। इसे अंपायर ने नो बॉल करार दिया। इसके बाद 17वें ओवर में भी दो बार उनका पैर साइड लाइन के बाहर चला गया। इस ओवर की दोनों फ्री हिट बॉल पर बेथेल ने छक्का जड़ा।

एजीआई हम मनुष्यों का 'आखिरी आविष्कार' साबित नहीं होगी

1960 के दशक में गणितज्ञ आईजे गुड ने एक विचार सामने रखा था, जो तब से सिलिकॉन वैली का सूत्रवाक्य बन गया है। उन्होंने कहा था कि यदि हम एक अल्ट्रा-इंटेलिजेंट मशीन बनाएं, तो वह और भी बेहतर मशीनें डिजाइन कर सकेगी। तब एक ऐसी बुद्धिमत्ता का विस्फोट होगा, जो मनुष्य की बुद्धि-क्षमताओं को बहुत पीछे छोड़ देगा। ऐसे में इस तरह की पहली मशीन मनुष्य का 'आखिरी आविष्कार' साबित होगी। यह भविष्यवाणी- जो कभी साइंस-फिक्शन की बात थी- आज दुनिया की शक्तिशाली संस्थाओं का मकसद बन गई है। लेकिन अगर हम यह मान भी लें कि भविष्य की प्रणालियां आज के मॉडलों से कहीं आगे बढ़ते हुए नए समाधान जनरेट कर सकती हैं, फिर भी 'अंतिम-आविष्कार' वाला सिद्धांत सवालों के दायरे में रहेगा। हमें याद रखना चाहिए कि इनोवेशन किसी आइडिया से लेकर उसके इम्पैक्ट तक बिना किसी रुकावट वाली एक शृंखला की तरह है, जिसमें कोई सबसे कमजोर कड़ी भी हो सकती है। ये कमजोर कड़ियां ही मानव-प्रगति का अधिकांश हिस्सा निर्धारित करती हैं। 1986 में, स्पेस शटल चैलेंजर अपने प्रक्षेपण के 73 सेकंड बाद ही धराशायी हो गया था। इसलिए नहीं कि उसके विश्व स्तरीय इंजनों या सॉफ्टवेयर में कोई खराबी आ गई थी, बल्कि इसलिए क्योंकि एक छोटा-सा रबर सील ठंडे वायुमंडलीय तापमान के संपर्क में आने पर फेल हो गया था। उसे ओ-रिंग कहकर पुकारा गया। वह उन महत्वपूर्ण अड़चनों का एक रूपक बन गया है, जो सबसे परिष्कृत प्रणालियों को भी नाकाम बना सकती हैं। कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता (एजीआई) भले ही आरंभिक चरणों ?वाली किसी मेडिकल रिसर्च में नाटकीय रूप से तेजी ला सकती हो, लेकिन अगर वह क्लिनिकल ट्रायल्स को रेगुलेटरी अनु?मतियां प्राप्त नहीं कर सकती, तो उसका तथाकथित ब्रेक-थ्रू कभी ऐसा आविष्कार नहीं बन पाएगा, जो हमारे जीवन को बेहतर बनाता है। जब खोज के शुरुआती चरण ऑटोमैटेड हो जाते हैं, तब भी मनुष्य की भूमिका समाप्त नहीं हो जाती; वह बस शेष बाधाओं की ओर स्थानांतरित हो जाती है। और ये वैसी चुनौतियां होती हैं, जिनमें निर्णय, अंतर्निहित ज्ञान और व्यावहारिक कौशल ही सर्वाधिक मायने रखते हैं। एजीआई को न केवल मनुष्यों से बेहतर प्रदर्शन करना होगा; बल्कि उसे एजीआई का उपयोग करके ऐसा करना होगा। अगर 'अंतिम-आविष्कार' वाले सिद्धांत को सच साबित होना है, तो हम मनुष्यों को एआई के साथी या सुपरवाइजर के रूप में भी गैर-जरूरी साबित हो जाना होगा। यह अभी बहुत दूर की कौड़ी है। 2016 में गूगल डीपमाइंड के हराने के बाद उसकी श्रेष्ठता तय हो गई लग रही थी। लेकिन 2023 में शोधकर्ताओं ने दिखाया कि शीर्ष इंजनों को उनके प्रशिक्षण से बाहर असामान्य स्थितियों में ले जाया जाए तो मामूली कंप्यूटिंग कौशल वाला एक मनुष्य भी उन्हें हरा सकता है। मनुष्यों द्वारा दिए जाने वाले इनपुट्स आज भी सबसे ज्यादा वैल्यू-एड करने वाले होते हैं। 'अंतिम-आविष्कार' वाला सिद्धांत यह भी मानता है कि तमाम प्रासंगिक सूचनाओं को कोडिफाई किया जा सकता है, लेकिन ऐसा आमतौर पर नहीं होता। जटिल प्रणालियों को चलाने वाली सूचनाएं अकसर बिखरी हुई, स्थानीय और अनकही होती हैं। नॉलेज कोई पोर्टेबल चीज नहीं है। ऐसे में एजीआई को मनुष्यता का अंतिम आविष्कार करार देना एक अतिरंजित दावा है। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट,कार्ल बेनेडिक्ट फ्रे)

हम केवल आमदनी के लिए ही कोई काम नहीं करते हैं

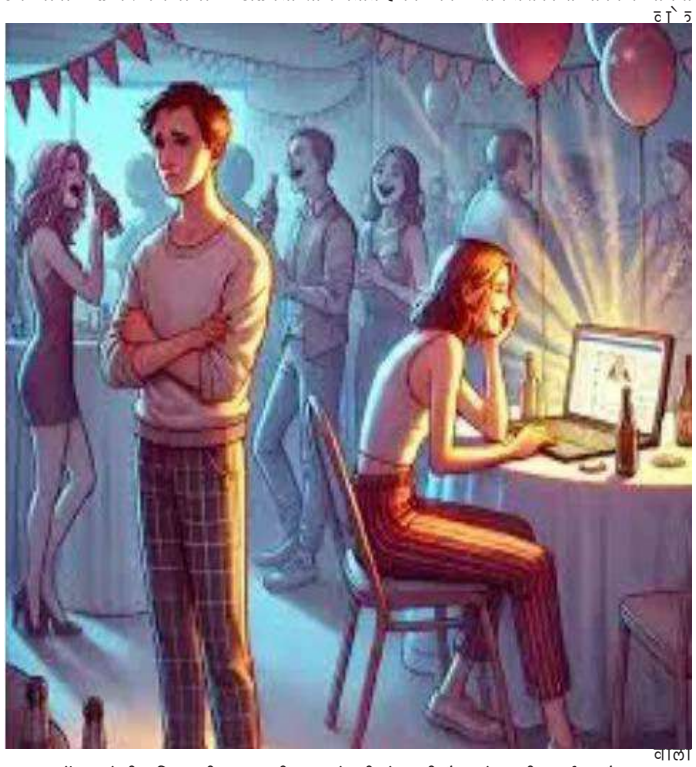

कर्ट वोनेगट ने अपने उपन्यास 'प्लेयर पियानो' (1952) में एक ऐसी दुनिया की कल्पना की थी, जहां मशीनों ने अधिकांश उद्योगों को ऑटोमैट कर दिया है और केवल कुछ इंजीनियर तथा मैनेजर ही व्यवस्था की निगरानी के लिए बचे हैं। बाकी सभी लोगों के भोजन और आवास की व्यवस्था सरकार करती है, लेकिन उनके पास करने के लिए कोई काम नहीं है। क्या वोनेगट की यह कल्पना दूरदर्शी सिद्ध हुई है? यह कहना तो अभी संभव नहीं है कि एआई हमारी वर्कफोर्स के एक बड़े हिस्से को अनावश्यक बना देगा। लेकिन इतना हम जरूर जानते हैं कि एआई मनुष्य-जीवन के मायनों के सामने गम्भीर चुनौतियां प्रस्तुत करने लगा है। यदि हमारे अधिकांश काम ऑटोमैट हो जाते हैं, तो औसतन हम अधिक समृद्ध होंगे। इससे आपकी आय दोगुनी हो जाती है तो जीवन का मूल्यांकन करने के आपके पैमाने भी उतनी ही मात्रा में कठोर हो जाते हैं। लेकिन जीवन के कोई मायने होना एक अलग विषय है। हम जो काम करते हैं, उससे हमें केवल आमदनी ही नहीं मिलती, वह हमारी पहचान का भी एक हिस्सा होता है। दूसरी तरफ, अगर हमारे पास करने को कुछ न हो तो यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, फिर भले ही हमें पूरी आमदनी मिल रही हो। वेतन के साथ-साथ काम व्यक्ति को जीवन में अनुशासन, लगाव की भावना, सामाजिक प्रतिष्ठा और किसी उद्देश्य में योगदान देने का एहसास भी देता है। इन गुणों का री-डिस्ट्रीब्यूशन पैसों की तरह नहीं किया जा सकता। होना ही पर्याप्त है। जब हम किसी असाधारण चीज से पीछे रह जाते हैं तो वो अलग बात है; लेकिन किसी ऐसी चीज द्वारा अप्रासंगिक बना दिया जाना- जो केवल 'गुड-इनफ' हो- बिल्कुल दूसरी बात है। इसके अलावा, एआई-संचालित मनोरंजन और 'कम्पैनियनशिप' (एआई को दोस्त समझकर उसी के साथ समय बिताते रहना) लोगों के समय और सामाजिक जुड़ाव की जरूरत के बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले सकते हैं। वे उन अधिक चुनौतीपूर्ण गतिविधियों का स्थान भी ले सकते हैं, जिनसे जीवन में मायनों का निर्माण होता है। सहज और निर्बाध निकटता का अनुभव उपलब्ध कराकर एआई उन प्रयासों, कर्तव्यों, पारस्परिकता, निःस्वार्थता और असुविधाओं को पीछे धकेल सकता है, जिनकी वास्तविक संबंधों को आवश्यकता होती है। एआई के साथ संबंध हमसे बदले में कुछ भी नहीं मांगता। वास्तव में वह संबंध के रूप में प्रस्तुत किया गया उपभोग मात्र है। डिजिटल-जीवन पहले ही मानवीय संबंधों को बदल चुका है। युवाओं में सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग जीवन में संतुष्टि की भावना के घटते चले जाने से जुड़ा पाया गया है। इसमें अभी तक एआई की भूमिका नहीं है, लेकिन इससे इतना तो पता चलता ही है कि डिजिटल माध्यमों से अधिक संपर्क मानवीय संबंधों में अधिक गहराई नहीं लाता। सच तो यह है कि जीवन में मायनों की तलाश शायद ही कभी कम्फर्ट की स्थिति से होती है। वह किसी चुने हुए उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों से ही होती है, चाहे वह अपने बच्चे का पालन-पोषण हो या किसी स्किल में महारत हासिल करना। जीवन में पीछे मुड़कर देखने पर लोग किसी सार्थक लक्ष्य के लिए किए गए संघर्ष को ही अधिक मूल्यवान मानते हैं। संभवतः यही कारण है कि अधिक समृद्ध और विकसित समाज अधिक सुविधा तो अनुभव करते हैं, लेकिन जीवन के उद्देश्यों का अधिक गहरा बोध उन्हें नहीं हो पाता। यह भी याद रखें कि अगर एआई मानवीय क्षमताओं से आगे निकल जाए, तब भी हर प्रकार का काम समाप्त नहीं होगा। कंप्यूटरों के शतरंज में मनुष्यों से बेहतर हो जाने के बाद भी लोगों ने शतरंज खेलना बंद नहीं किया है। लोग आज भी दौड़ते हैं, भोजन पकाते हैं, संगीत रचते हैं, फर्नीचर बनाते हैं और लाइव-परफॉर्मेंस को महंगे टिकट खरीदकर देखते हैं। जीवन में मायनों की तलाश शायद ही कभी कम्फर्ट की स्थिति से होती है। वह किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों से ही होती है, चाहे वह बच्चे की परवरिश हो या किसी स्किल में महारत हासिल करना। लोग किसी लक्ष्य के लिए किए गए संघर्ष को ही मूल्यवान मानते हैं। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट,कार्ल बेनेडिक्ट फ्रे)

टूरिज्म डॉलर भी दे सकता है और जॉब्स भी

विदेशी मुद्रा पाने और नौकरियां क्रिएट करने के सबसे तेज तरीकों में पर्यटन भी है, जबकि उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। एक ऐसे समय में, जब वैश्विक अनिश्चितता, ऊर्जा कीमतों में अस्थिरता, आपूर्ति शृंखला में व्यवधान और भू-राजनीतिक झटके चालू खाते पर दबाव डाल रहे हैं, टूरिज्म हमारी अर्थव्यवस्था के लिए स्टैबलाइजर का काम कर सकता है। विदेशी पर्यटक सीधे हमारी अर्थव्यवस्था में डॉलर लेकर आते हैं। वे हॉस्पिटैलिटी, परिवहन, पर्यटन स्थलों, स्मृति-चिह्नों, सांस्कृतिक अनुभवों और स्थानीय व्यंजनों पर पैसा खर्च करते हैं। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र अपने आप में रोजगार सृजन का एक शक्तिशाली स्रोत है। पर्यटन में जुड़ा हर प्रत्यक्ष रोजगार 13 अप्रत्यक्ष रोजगारों को भी जन्म देता है। वेटर, शेफ, ड्राइवर, गाइड, शिल्पकार, होमस्टे संचालक, डिजिटल मार्केटर और हजारों-छोटे स्थानीय उद्यम इसके कुछ उदाहरण मात्र हैं। जहां मैन्युफैक्चरिंग-आधारित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश- जिसे दीर्घकालिक समाधान के रूप में प्राथमिकता दी जाती है- साकार होने में वर्षों लेता है और सार्थक स्तर पर विदेशी मुद्रा उत्पन्न करने में उससे भी अधिक समय लगाता है, वहीं पर्यटन किसी पर्यटक के निर्णयों को कुछ ही महीनों में डॉलरों में परिवर्तित कर देता है। भारत की एविएशन कंपनियों ने 2000 से अधिक नए विमानों का ऑर्डर दिया है, जिनकी आपूर्ति आने वाले वर्षों में तेजी से बढ़ेगी। ऊपरी तौर पर तो यह एविएशन क्षेत्र की महत्वाकांक्षा की कहानी प्रतीत होती है, किंतु यदि इसके साथ ही इन विमानों को विदेशी पर्यटकों से भरने के प्रयास नहीं किए गए, तो उलटा परिणाम भी मिल सकता है : भारतीयों के लिए विदेश यात्रा अधिक आसान और सस्ती हो जाएगी, जिससे कहीं अधिक मात्रा में बहुमूल्य विदेशी मुद्रा देश से बाहर जाएगी। पिछले चार वर्षों में भारत के विदेशी पर्यटन मार्केटिंग बजट को लगभग शून्य तक घटा दिया गया है। परिणाम भी अपेक्षित हैं। वर्ष 2024 में भारत में 99 लाख अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आए- जो महामारी-पूर्व के सर्वोच्च स्तर से लगभग 10फीसदी कम हैं। जहां भारत के सभी प्रमुख प्रतिस्पर्धी देश 2019 के स्तर को पार कर चुके हैं, हम अब भी उस स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रहे हैं। इसलिए हमारे विदेशी पर्यटन मार्केटिंग बजट में की गई तीव्र कटौती आश्चर्यजनक है। एक विदेशी पर्यटक अपनी प्रत्येक यात्रा पर भारत के जीडीपी में 3,000 डॉलर का योगदान देता है, जबकि एक घरेलू पर्यटक का योगदान केवल 75 डॉलर होता है- यानी 40 गुना का अंतर। मार्केटिंग पर 20 करोड़ डॉलर का निवेश 10 लाख अतिरिक्त विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करेगा, जिससे 3.6 अरब डॉलर का आर्थिक मूल्य सृजित होगा, 40 करोड़ डॉलर की जीएसटी प्राप्ति होगी और 2.83 लाख नए रोजगार उत्पन्न होंगे। यानी मार्केटिंग पर खर्च किए गए प्रत्येक डॉलर पर 18 गुना रिटर्न प्राप्त होगा। केवल 55,000 अतिरिक्त पर्यटक- जो भारत के वर्तमान टूरिस्ट-बेस का मात्र 0.5फीसदी हैं- पूरे मार्केटिंग खर्च की भरपाई कर देंगे। ये कोई अनुमान नहीं हैं। ये वही परिणाम हैं, जिन्हें इन्क्रेडिबल इंडिया अभियान ने प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध करके दिखाया था। वैश्विक पर्यटन में डिजिटल टेक्नोलॉजी बड़े बदलाव ला रही है। और यही वह क्षेत्र है, जिसमें भारत की अनुपस्थिति हमारे लिए महंगी साबित हो रही है। आज पर्यटन से संबंधित कुल बिक्री का 78फीसदी ऑनलाइन होता है, 70फीसदी बुकिंग मोबाइल उपकरणों पर पूरी की जाती हैं और 45फीसदी लेन-देन ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसियों के माध्यम से होता है। प्रतिस्पर्धा का मैदान अब यूट्यूब प्री-रोल्स, सोशल मीडिया एल्गोरिदम, प्रोग्रामेटिक डिस्प्ले और इन्फ्लुएंसर नेटवर्कों पर स्थानांतरित हो चुका है। ये ऐसे चैनल्स हैं, जहां व्यय को मापा जा सकता है, टारगेटिंग सटीक होती है और रिटर्न ऑन इनवेस्टमेंट का लगभग रियल-टाइम में आंकलन किया जा सकता है। भारत के पास बुनियादी ढांचा तो है, किंतु वह उसका लाभ उठाने में विफल रहा है। इन्क्रेडिबल इंडिया के फेसबुक पर 19 लाख और इंस्टाग्राम पर 7.85 लाख ही फॉलोअर्स हैं। इतने ही फॉलोअर्स वाले सऊदी अरब ने जहां एक ही महीने में 2.7 करोड़ कंटेंट व्यू अर्जित किए, वहीं भारत केवल 3.88 लाख व्यू तक सीमित रहा। मंच मौजूद है, किंतु भारत लगभग एक दशक से वैश्विक मार्केटिंग परिदृश्य से पूरी तरह अनुपस्थित है। इसकी भारी कीमत हमारे पर्यटन क्षेत्र को चुकानी पड़ रही है। केवल मार्केटिंग भी काफी नहीं होगी। हमें मिशन मोड में पर्यटन क्षेत्र को डी-रेगुलेट भी करना होगा। होटल, रेस्तरां, होमस्टे, परिवहन संचालक और पर्यटन सेवा प्रदाता अनेक लाइसेंसों, प्रक्रियाओं और निरीक्षणों के बोझ तले काम करते हैं। जो परियोजनाएं दूसरे एशियाई देशों में 18 महीनों में पूरी हो जाती हैं, उन्हें भारत में कहीं अधिक समय लगता है। एकीकृत लाइसेंस व्यवस्था, डिजिटलीकरण और स्वचालित नवीनीकरण को लागू किया जाना चाहिए। हमारे प्रत्येक राज्य को पर्यटन का अग्रदूत बनना होगा। प्रत्येक राज्य को 15 प्रमुख पर्यटन स्थलों की पहचान कर उन्हें ऐसे समग्र पर्यटन इको-सिस्टम में विकसित करना चाहिए, जिनमें पहुंच, आवास, अनुभव, आयोजन, सुरक्षा, स्वच्छता, स्थानीय उद्यम और मार्केटिंग- सभी का समावेश हो। कोई डेस्टिनेशन केवल इसलिए तैयार नहीं माना जा सकता कि वहां सड़कें, होटल या संकेतक उपलब्ध हैं। वह तभी नजरों में आता है, जब कोई यात्री उसकी विशिष्टता को खोज सके, उसकी विश्वसनीयता का आकलन कर सके, बुक किए जा सकने वाले अनुभवों की पहचान कर सके, आसानी से लेन-देन कर सके और इस बात पर भरोसा कर सके कि उसे अपेक्षानुरूप अनुभव प्राप्त होगा। पर्यटन क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता अब इस पर भी निर्भर करेगी कि कोई डेस्टिनेशन कंटेंट-क्रिएटर्स के अनुकूल है या नहीं, उसे आसानी से ऑनलाइन खोजा जा सकता है या नहीं, वह लेन-देन के लिए तैयार है या नहीं और उस पर भरोसा किया जा सकता है या नहीं।

हमें कंटेंट-क्रिएशन अर्थव्यवस्था को भी पर्यटन की एक रणनीति के रूप में अपनाना होगा। सरकारी अभियान जागरूकता उत्पन्न कर सकते हैं, किंतु विश्वास का निर्माण कंटेंट-क्रिएटर्स करते हैं। एक उत्कृष्ट वीडियो वह प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जो कोई ब्रोशर नहीं कर सकता। 2.83 लाख नए रोजगार... एक विदेशी पर्यटक अपनी प्रत्येक यात्रा पर जीडीपी में 3,000 डॉलर का योगदान देता है। मार्केटिंग पर 20 करोड़ डॉलर का निवेश 10 लाख अतिरिक्त विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करेगा, जिससे 3.6 अरब डॉलर का मूल्य सृजित होगा, 40 करोड़ डॉलर की जीएसटी प्राप्ति होगी और 2.83 लाख नए रोजगार उत्पन्न होंगे। (ये लेखक के अपने विचार हैं,अमिताभ कांत)

कर्नाटक में कांग्रेस ने अपनी पुरानी गलतियां नहीं दोहराईं

राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस जो नहीं कर पाई थी, कर्नाटक में उसने कर दिखाया। राजस्थान में पार्टी ने अशोक गहलोत और सचिन पायलट को बारी-बारी से मुख्यमंत्री बनाने का वादा किया था, लेकिन गहलोत ने इसे नहीं होने दिया। उन्होंने तो पार्टी को ही चुनौती दे दी थी। पार्टी आलाकमान पायलट को राजस्थान कांग्रेस का अध्यक्ष तक नहीं बना पाया है, ताकि वे 2028 के चुनाव में मुख्यमंत्री पद के स्वाभाविक उत्तराधिकारी बन सकें। इसी तरह छत्तीसगढ़ में जब पार्टी ने आधे कार्यकाल के लिए टीएस सिंहदेव को राज्य की कमान सौंपनी चाही तो ज्यादातर विधायकों का समर्थन लेकर बैठे भूपेश बघेल ने भी ऐसे प्रयास को नाकाम कर दिया था। इन दोनों ही राज्यों में कांग्रेस को गुटबाजी का खामियाजा भुगतना पड़ा और 2023 में वो सत्ता गंवा बैठी। इसके उलट, कर्नाटक में सत्ता हस्तांतरण शांति से हुआ। इसका श्रेय सिद्धारमैया को जाता है, जो अपने उपमुख्यमंत्री के लिए सीएम की कुर्सी छोड़ने पर राजी हो गए। किसी राजनेता के लिए ऐसा करना आसान नहीं होता। इस बार आलाकमान भी इसको लेकर स्पष्ट रहा कि वह क्या चाहता है। शीर्ष नेतृत्व में एकजुटता दिखी और अपना निर्णय मनवाने की दृढ़ता भी। दक्षिण में कांग्रेस के बढ़ते दबदबे को देखते हुए कर्नाटक को लेकर उसके दांव आज अधिक ऊंचे हैं। गहलोत और बघेल की तरह सिद्धारमैया के पास भी उनके समर्थक विधायकों का बहुमत था। लेकिन वे बगावत के बजाय हाईकमान के निर्देश का पालन करते नजर आए। भले उन्हें भविष्य में इसका सियासी फायदा मिले या नहीं, लेकिन उन्होंने अपनी साख जरूर बना ली है। वे जानते थे कि डी.के. शिवकुमार केंद्रीय नेतृत्व पर दबाव बना रहे थे। ऐसे में हालात सिद्धारमैया और डीकेएस के अलावा कांग्रेस के लिए भी उलझन भरे हो सकते थे। एक वक्त तो डीकेएस की भाजपा से भी नजदीकियां बढ़ने की खबरें आई थीं। शायद यह भी हाईकमान पर दबाव बढ़ाने के लिए ही होगा। सिद्धारमैया ने हाईकमान के बदले मूड को भी भांप लिया था। कुरुबा ओबीसी समुदाय से ताल्लुक रखने वाले सिद्धारमैया जनाधार वाले नेता हैं और 'अहिंदा' (पिछड़े, अल्पसंख्यक, दलित) गठबंधन के सूत्रधार माने जाते हैं, जिसने कांग्रेस को मजबूत स्थिति में बनाए रखा। इसी की बदौलत सिद्धारमैया दो बार विपक्ष के नेता बने और दो बार मुख्यमंत्री भी रहे। उनके सियासी कद और ओबीसी पहचान की वजह से ही राहुल गांधी लगातार उनका समर्थन करते रहे हैं। लेकिन अब कल यानी 3 जून को डीकेएस मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे और उनके नाम का प्रस्ताव सिद्धारमैया ने ही रखा। सिद्धारमैया के गद्दी छोड़ने का मतलब यह नहीं निकाला जा सकता कि वे राजनीति भी छोड़ रहे हैं। इसके उलट, उन्होंने संकेत दे दिया है कि वे एक विधायक के तौर पर कर्नाटक में सक्रिय रहेंगे। पार्टी ने उन्हें राज्यसभा सीट की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में जाने से इनकार कर दिया। हालांकि, यह कहना मुश्किल है कि यदि कांग्रेस उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की पेशकश करेगी तो वे उसे भी ठुकरा देंगे या नहीं। खरगे का कार्यकाल जल्द समाप्त होने वाला है और ऐसे में ओबीसी समुदाय से आने वाला कोई अध्यक्ष राहुल की राजनीति को नई गति दे सकता है। मुख्यमंत्री पद छोड़ने से कुछ घंटे पहले ही सिद्धारमैया ने कर्नाटक की जाति जनगणना को मंजूरी दे दी, जिसका आदेश उन्होंने ही 2025 में दिया था। ऐसा करके उन्होंने डीकेएस के सामने एक कठिन सियासी चुनौती छोड़ दी है। यदि डीकेएस इसे स्वीकार करते हैं, तो उनका अपना वोक्कालिगा समुदाय नाराज हो सकता है। यदि इसे ठंडे बस्ते में डालते हैं तो ओबीसी समुदाय नाराज होकर फिर सिद्धारमैया के पक्ष में लामबंद हो सकता है। कर्नाटक का उदाहरण बताता है कि कांग्रेस में निर्णय करने की बात आए तो राहुल और प्रियंका अब अधिक तालमेल के साथ काम कर रहे हैं। इससे दक्षिण भारत में कांग्रेस ने खुद को और मजबूती ही प्रदान की है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,नीरजा चौधरी)

मुजतबा का पिता को कंधा देने पर सस्पेंस, क्या इजराइल वाकई मार देगा

तेहरान। उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि ईरान में क्या हो रहा है। अन्य ब्रिटिश अखबार 'द सन' के मुताबिक वेंटिलेटर पर हैं। वो बिना सपोर्ट अमेरिकी न्यूज चैनल सीबीएस ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया है कि ईरान के बड़े अधिकारियों को भी नहीं पता है कि मुजतबा कहां हैं। लोकेशन लीक बैठकों में शामिल होते हैं। सवाल-5: ऐसे में ईरान चला कौन रहा है? जवाब: न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, 1979 की क्रांति के बाद, पहली बार ईरान के पास कोई

के सांस भी नहीं ले पा रहे हैं। 2. अमेरिकी अखबार 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' के मुताबिक बुरी तरह से घायल हैं, लेकिन दिमाग सक्रिय है और वे फैसले ले रहे हैं। उनके पैर की 3 बार सर्जरी हो चुकी है। उन्हें प्रोस्थेटिक, यानी कृत्रिम पैर लगाया जाना है। उनका चेहरा और होंठ बुरी तरह जल गए हैं। उनके हाथ में भी चोट लगी है। 3. सुप्रीम लीडर के दफ्तर में प्रोटोकॉल महानिदेशक मजाहेर होसैनी के मुताबिक, सुप्रीम लीडर के कान के पीछे छोटी खरोंच है। ईरान के स्वास्थ्य मंत्रालय का कहना है कि सुप्रीम लीडर के घाव में कुछ टांके लगे, लेकिन उन्हें कोई गंभीर चोट नहीं आई है। सवाल-3: क्या मुजतबा फिलहाल ईरान में नहीं हैं? जवाब: कुवैत के अखबार अल-जरीदा ने रिपोर्ट किया था कि मुजतबा रूस की राजधानी मॉस्को में इलाज करवा रहे हैं। उन्हें राष्ट्रपति पुतिन के सुझाव पर रूसी प्लेन से मॉस्को ले जाया गया है। यहीं उनकी सर्जरी हुई है और वे रिकवर हो रहे हैं। पुतिन के ही किसी घर में उन्हें ठहराया गया है। अल-जरीदा के मुताबिक, मुजतबा की गंभीर चोटों को विशेष इलाज और देखरेख की जरूरत थी, जो ईरान में जंग के बीच मुमकिन नहीं था। इजराइल की धमकी के बाद ईरान में उनकी सुरक्षा को खतरा हो सकता था। हालांकि, मॉस्को में ईरान के राजदूत काजेम जलाली ने इन दावों को खारिज कर दिया। अमेरिकी मीडिया के मुताबिक भी मुजतबा ईरान में ही किसी सीक्रेट लोकेशन पर हैं।

न हो, इसलिए ईरान के सीनियर नेता और इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के अधिकारी मिलने या हाल-चाल पूछने भी नहीं जाते हैं। सवाल-4: तो फिर सुप्रीम लीडर तक सूचनाएं कैसे पहुंचती हैं? जवाब: किसी भी डिजिटल ट्रैकिंग से बचकर मुजतबा तक मैसेज पहुंचाने के लिए पुराने जमाने का तरीका अपनाया जाता है। अमेरिकी अखबार द न्यूयॉर्क टाइम्स और इजराइली अखबार इजराइल हायोम की रिपोर्ट्स के मुताबिक:-कोई भी खबर, संदेश या आदेश फोन या कंप्यूटर से नहीं भेजा जाता। इन्हें हाथों से कागज पर लिखा जाता है। संदेश लिखे कागज लिफाफे में बंद करके सील किए जाते हैं, फिर ये दर्जनभर भरोसेमंद संदेशवाहकों की एक चेन से गुजरते हैं। ये संदेशवाहक मुख्य सड़कों की बजाय गांव-देहात के रास्तों से होते हुए टुकड़ों में सफर करते हैं और संदेश मुजतबा तक पहुंचाते हैं। जवाब भी इसी के जरिए आते हैं। अमेरिकी खुफिया अधिकारियों ने इसे 'कोरियरों का भूलभुलैया' बताया है। इसी वजह से अमेरिका-ईरान की बातचीत या फैसलों में देरी हुई है। एक ईरानी अधिकारी ने इजराइली अखबार 'द जेरूसलम पोस्ट' को बताया कि जब तक सुप्रीम लीडर की मंजूरी मिलती है, तब तक वो शर्त या सूचना पुरानी हो चुकी होती है। क्योंकि जवाब आने में काफी वक्त लगता है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, कुछ मामलों में सीक्रेट ऑडियो लिंक के जरिए भी मुजतबा एक ऐसा धार्मिक नेता नहीं है जो हर फैसले पर आखिरी मुहर लगाए। कागजी तौर पर भले मुजतबा सुप्रीम लीडर हैं, लेकिन हकीकत ये है कि ईरान को आईआरजीसी के टॉप कमांडर्स और मुजतबा के वफादार सलाहकारों का ग्रुप चला रहा है। दरअसल, आयतुल्लाह खामेनेई ने मरने से पहले ही अपनी गैरमौजूदगी को भरने के लिए अलग-अलग स्तर पर जिम्मेदारियां बांट दी थी। न्यू यॉर्क टाइम्स के मुताबिक बड़े सैन्य और सरकारी पदों पर 4 स्तर के विकल्प तैयार किए गए थे, जिससे किसी की मृत्यु होने पर अगला व्यक्ति तुरंत जिम्मेदारी संभाल ले। इसके अलावा उन्होंने पहले ही आईआरजीसी को कई अधिकार दे दिए थे। ब्रिटिश थिंकटैंक चाथम हाउस में मिडिल ईस्ट प्रोग्राम के डायरेक्टर सनम वकील के मुताबिक, 'ईरान में अभी कोई एक कमांडर नहीं है। यहां एक सिस्टम चल रहा है, जहां बहुत सारे लोग कमांड कर रहे हैं। हर कोई अपने लिए लड़ रहा है।'

अमेरिका की इंडियाना यूनिवर्सिटी ऑफ ब्लूमिंगटन में ईरानी राजनीति के प्रोफेसर हुसैन बनाई के मुताबिक, 'ईरान में सुप्रीम लीडर की शक्तियां कम होने के कई सबूत हैं। राष्ट्रपति जो चाहते हैं, कहते हैं। स्पीकर को जो ठीक लगता है, वो कह देते हैं। किसी में कोई सामंजस्य नहीं है।' रॉयटर्स ने सूत्रों के हवाले से रिपोर्ट किया है कि अब मुजतबा की भूमिका सहमति की मुहर लगाने भर की रह गई है। बड़े फैसले जनरल लेते हैं और मुजतबा उन्हें अपनी धार्मिक-संवैधानिक वैधता देते हैं। ईरान मामलों के जानकार आरश अजीजी के मुताबिक, जरूरी मसौदे शायद मुजतबा से होकर गुजरते होंगे, लेकिन यह मुश्किल है कि वे नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के फैसले पलट सकें। यहां तक कि राष्ट्रपति पजशकियान भी कई बड़े फैसलों से बाहर रखे गए हैं। सवाल-6: जंग खत्म हो गई, क्या अब भी मुजतबा की जान को खतरा है? जवाब: 4 मार्च, 2026 को इजराइल के रक्षा मंत्री काट्ज ने धमकी दी- 'जो भी ईरान का लीडर बनेगा, वो इजराइल का टारगेट होगा।' उन्होंने 1 जुलाई को फिर दोहराया कि ईरान के सुप्रीम लीडर मुजतबा को मारना हमारा टारगेट है। इजराइल टारगेट किलिंग में एक्सपर्ट है। उसने दशकों की मेहनत के बाद ईरान में अपना खुफिया नेटवर्क बहुत मजबूत कर लिया है। करीब 3 महीने की जंग में इजराइल ने ईरान में 250 से ज्यादा टारगेट किलिंग की हैं। स्वीडन की उप्साला यूनिवर्सिटी में इस्लामी धर्मशास्त्र के प्रोफेसर मोहम्मद फजलहाशमी के मुताबिक, 'इजराइल और अमेरिका का खुफिया तंत्र ईरान से मजबूत है। ईरान में इजराइल के एजेंट तैनात हैं।

मुजतबा जैसे ही सामने आएंगे, अमेरिका और इजराइल उन्हें अपना निशाना बना लेंगे।' इजराइल पहले भी सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े हमले कर चुका है। 2024 में ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान के शपथ ग्रहण में पहुंचे हमास प्रमुख इस्माइल हानिया को इजराइल ने मिसाइल हमले में मार दिया था। 1992 में हिज्बुल्लाह के महासचिव अब्बास अल-मुसावी पर लेबनान में एक रैली से लौटते हुए हमला किया था। सवाल-7: क्या वाकई पिता के जनाजे में नहीं पहुंचेंगे मुजतबा? जवाब: भारत में मुजतबा खामेनेई के प्रतिनिधि आयतुल्लाह हाकिम इलाही ने 3 जुलाई को बताया कि सुप्रीम लीडर जनाजे में शामिल होना चाहते थे। वो अपने लोगों से मिलना चाहते थे। लेकिन सुरक्षाबलों ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। ईरान के आंतरिक सुरक्षा मामलों के डिप्टी मिनिस्टर और समारोहों की देखरेख करने वाली समिति के सचिव अली अकबर पोरजमशीदियन ने कहा कि सुप्रीम लीडर के जनाजे में शामिल होने का फैसला उनके कार्यालय के हाथों में है। आयोजकों को इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है कि वे शामिल होंगे या नहीं। अगर मुजतबा शामिल नहीं होंगे, तो उनकी जगह जनाजे की नमाज कौन अदा करेगा, इसकी घोषणा भी अभी नहीं हुई है।

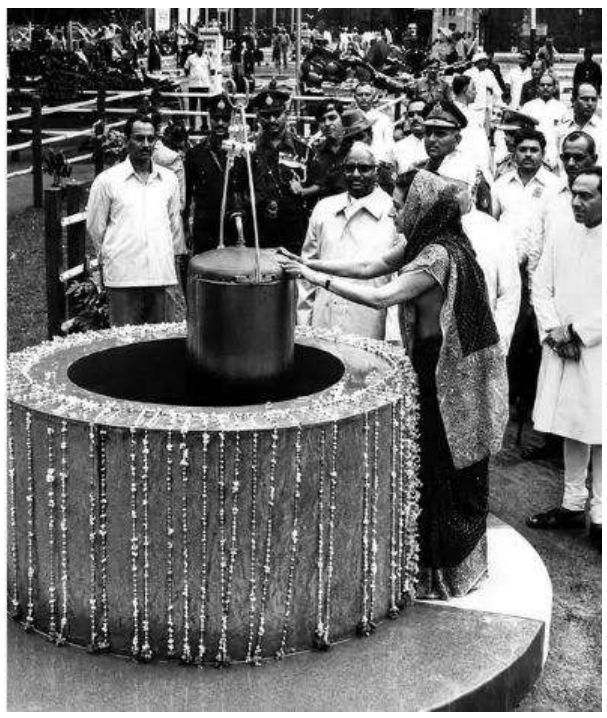

दावा- ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले पीएम मोदी को दी धमकी, फेसबुक पोस्ट में कमेंट कर धमकाया, 9 जुलाई को कार्यक्रम

कैनबरा। पीएम मोदी को ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जान से मारने की धमकी मिली है। ऑस्ट्रेलिया की फेडरल पुलिस मोदी को दी गई धमकी की जांच कर रही है। जुड़े आईपी एड्रेस की पहचान कर ली है। हालांकि, अब तक पुलिस ने धमकी पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। साथ ही पुलिस ने किसी गिरफ्तारी की सबसे तेजी से बढ़ते प्रवासी समुदायों में शामिल हैं। विदेश दौरे पर पीएम की सुरक्षा में मेजबान भी शामिल:-प्रधानमंत्री के विदेश दौरे की सुरक्षा भारत और

द ऑस्ट्रेलिया टुडे की शनिवार की रिपोर्ट में दावा किया गया कि धमकी फेसबुक पर 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम के प्रचार से जुड़ी एक पोस्ट के नीचे लिखी गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, पोस्ट के नीचे अबू मुस्तफा नाम के फेसबुक अकाउंट से लिखा गया, 'स्टेडियम की छत कार्यक्रम के दौरान बंद रहनी चाहिए, नहीं तो वह ऑस्ट्रेलिया अपनी मौत के लिए आएगा।' धमकी सामने आते ही जानकारी ऑस्ट्रेलियन फेडरल पुलिस को दे दी गई थी। मोदी 8 जुलाई से 10 जुलाई तक ऑस्ट्रेलिया में रहेंगे। 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम 9 जुलाई को मेलबर्न के मार्वल स्टेडियम में होना है। मोदी को इसमें शामिल होना है। आईपी एड्रेस की पहचान, कोई गिरफ्तारी नहीं- जांच एजेंसियों ने प्रोग्राम की पोस्ट से पुष्टि भी नहीं की है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रधानमंत्री मोदी के दौरे के दौरान सुरक्षा व्यवस्था में ऑस्ट्रेलिया की फेडरल पुलिस, राज्य पुलिस और विशेष सुरक्षा इकाइयों समेत कई एजेंसियां मिलकर काम कर रही हैं। 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम में भारतीय शामिल होंगे- 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम में मार्वल स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के भारतीय मूल के लोग पीएम मोदी का स्वागत करेंगे। इसका उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में बसे भारतीय समुदाय को पीएम मोदी से जोड़ना और भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों को मजबूत करना है। यह केवल एक सामुदायिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत की प्रवासी कूटनीति का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल के लोगों की संख्या 10 लाख से ज्यादा है, जो वहां मेजबान देश मिलकर संभालते हैं। प्रधानमंत्री की सबसे नजदीकी सुरक्षा स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप (एसपीजी) के जिम्मे होती है, जबकि कार्यक्रम स्थल, होटल, एयरपोर्ट और यात्रा मार्ग की सुरक्षा मेजबान देश की पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां करती हैं। दौरे से पहले सुरक्षा टीमें कार्यक्रम स्थल का कई बार निरीक्षण करती हैं, आने-जाने के रास्तों की जांच होती है और भीड़ पर नजर रखने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाता है। दोनों देशों की खुफिया एजेंसियां संभावित खतरों की जानकारी साझा करती हैं।

धमकी मिलती है, तो तुरंत जांच शुरू होती है और सुरक्षा घेरा बढ़ाने, अतिरिक्त जांच जैसे कदम उठाए जाते हैं। पीएम मोदी दो बार ऑस्ट्रेलिया जा चुके- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो बार ऑस्ट्रेलिया की आधिकारिक यात्रा कर चुके हैं। जुलाई 2026 का दौरा उनका तीसरा ऑस्ट्रेलिया दौरा होगा। पहली बार वे नवंबर 2014 में प्रधानमंत्री बनने के कुछ महीनों बाद ऑस्ट्रेलिया पहुंचे थे। उन्होंने ब्रिस्बेन में जी20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया और कैनबरा में द्विपक्षीय यात्रा की। दूसरी बार प्रधानमंत्री मोदी मई 2023 में ऑस्ट्रेलिया पहुंचे। उन्होंने सिडनी में 'क्वाड लीडर समिट' में हिस्सा लिया और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री अल्बनीज के साथ बैठक की।

सिडनी के कुडोस बैंक एरिना में भारतीय समुदाय को संबोधित किया, जिसमें करीब 20 हजार लोग शामिल हुए थे। पहले भी मोदी को धमकी मिली-2026: पंजाब दौरे से पहले ब्लास्ट की धमकी मिली थी-पीएम नरेंद्र मोदी के पंजाब दौरे से एक दिन पहले 31 जनवरी को जालंधर के 4 स्कूलों में बम ब्लास्ट की धमकी मिली थी।

कैंब्रिज स्कूल, केएमवी संस्कृति स्कूल, ब्रिटिश ओलिवा स्कूल और सीजेएस पब्लिक स्कूल को धमकी भरा ईमेल भेजा गया था। हालांकि जांच के इस दौरान कुछ नहीं मिला था।

2022: पंजाब में ब्रिज पर फंस गया था पीएम का काफिला-5 जनवरी 2022 को पंजाब में पीएम नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में चूक हुई थी।

हुसैनीवाला जाते समय प्यारेआणा ब्रिज (फ्लाईओवर) पर प्रदर्शनकारी किसानों ने रास्ता जाम कर दिया था। इस वजह से पीएम का काफिला लगभग 15-20 मिनट तक फंसा रहा था। इसके बाद पीएम बिना रैली किए बठिंडा एयरपोर्ट वापस लौट गए थे।

जब इंदिरा ने लालकिले में 32 फीट नीचे दफनाया था टाइम-कैप्सूल

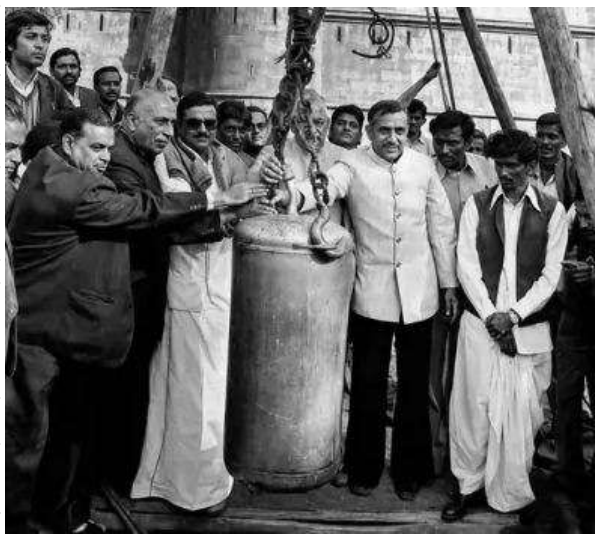

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति ट्रम्प ने अमेरिकी आजादी की 250वीं सालगिरह पर एक टाइम कैप्सूल दफनाया है। भारत की आजादी

के 25 साल बाद भी ऐसा ही टाइम कैप्सूल दफनाया गया था। 15 अगस्त 1973, आजादी की 26वीं सालगिरह। तब की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सुबह-सुबह लाल किला पहुंचीं। रस्मन तिरंगा फहराया, भाषण दिया और नेता-अधिकारियों के साथ लाहोरी दरवाजे की तरफ चल दीं। वहां पहले से 32 फीट गहरा एक कुआं खोदा गया था। इंदिरा ने उस कुएं में तांबे और स्टील से बना एक वैक्यूम-सील्ड, भारी-भरकम टाइम कैप्सूल दफना दिया। कहा गया- 'काल पत्र' नाम के इस कैप्सूल को 1 हजार साल बाद निकाला जाएगा। हालांकि, सत्ता बदली और 4 साल बाद ही इसे खुदवा लिया गया। 1970 का दशक। देश में कांग्रेस सरकार की कमान संभाल रही थीं इंदिरा गांधी। 1971 की जंग में पाकिस्तान को शिकस्त देकर वो अपने राजनीतिक करियर के चरम पर थीं। उन्हें ख्याल आया कि भविष्य की पीढ़ी को मौजूदा भारत के बारे में बताना चाहिए। यहीं से तय हुआ कि भारत की आजादी के 25 साल पूरे होने पर एक 'टाइम कैप्सूल' दफनाया जाएगा। इसमें देश की आजादी और उसके 25 साल बाद के भारत के बारे में बताने वाले दस्तावेज रखे जाएंगे। इसे तैयार करने की जिम्मेदारी मिली इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, यानी

को संबोधित करते हुए कहा, 'आजादी के 25 साल बाद अकाल का खतरा खत्म हो गया है? दावा किया गया है कि भूमि सुधारों को लागू करने से कृषि क्रांति पूरी हो गई है, क्या ये सच है?' यहीं से इंदिरा गांधी की इस पहल का विरोध शुरू हुआ। आरोप लगा कि वो टाइम कैप्सूल के जरिए खुद की और अपने परिवार की वाहवाही कराने की कोशिश कर रही हैं। इंदिरा गांधी को कहना पड़ा- मुझे टाइम कैप्सूल से जुड़ी चीजों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वहीं, आई.सी.एच.आर ने प्रो. कृष्णस्वामी को नोटिस जारी कर दिया। इसके बावजूद प्रोजेक्ट नहीं रुका। इस पूरे वाकये का खुलासा इकोनॉमिस्ट वीके रामचंद्रन के आर्टिकल से होता है। 1974 में 'सोशल साइंटिस्ट' जर्नल में छपे इस लेख का शीर्षक था- 'प्रोजेक्ट टाइम कैप्सूल एंड द इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल

ने इस दस्तावेज का ड्राफ्ट जारी कर दिया। उन्होंने इसे भारतीयों की बेइज्जती बताते हुए कहा- 'यह भारत का इतिहास नहीं है, बल्कि सत्ता में मौजूद कांग्रेस पार्टी की तथाकथित उपलब्धियों की जानकारी देने वाली कांग्रेस के महासचिव की रिपोर्ट जैसा दिखता है।' 1975-77 की इमरजेंसी के बाद देश का सियासी माहौल पूरी तरह बदल गया। 1977 में चुनाव हुए और इंदिरा गांधी की सरकार चली गई। उनके धुर विरोधी मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी। उन्होंने चुनावी कैम्पेन में कहा था कि सरकार बनी तो टाइम कैप्सूल निकलवाएंगे और सच सबके सामने लाएंगे। नवंबर 1977 के आखिर में टाइम कैप्सूल की जांच के लिए एक संसदीय समिति बनाई गई। इसकी कमान जनता पार्टी के पंजाब से सांसद यज्ञदत्त शर्मा को मिली। शर्मा ने कहा- सच्चाई उजागर करना और इतिहास से लीपापोती को रोकना जरूरी है। दिसंबर 1977 में कड़ी सुरक्षा के बीच टाइम कैप्सूल की खुदाई शुरू हुई। 8 दिसंबर 1977 को टाइम कैप्सूल निकाला गया। इसे निकालने में 58 हजार रुपए खर्च हुए, यानी दफनाने से 7 गुना ज्यादा। रिपोर्ट्स हैं कि मोरारजी देसाई और उनके कुछ मंत्रियों ने कैप्सूल के दस्तावेज देखे थे। टाइम कैप्सूल समिति के अध्यक्ष यज्ञदत्त शर्मा ने घोषणा की थी कि 20 दिसंबर 1977 को इन्हें संसद में पेश किया जाएगा।

आई.सी.एच.आर को। आई.सी.एच.आर ने ऐतिहासिक दस्तावेज तैयार करने का काम मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में इतिहास के प्रोफेसर एस. कृष्णस्वामी को सौंपा। प्रो. कृष्णस्वामी ने दस्तावेज तो बना दिए, लेकिन उन पर कुछ सलाह चाहते थे। उन्होंने दस्तावेजों की एक कॉपी उस दौर के जाने-माने इतिहासकार और तमिलनाडु के आर्काइव्स कमिश्नर टी. बद्रीनाथ को भेजी। बद्रीनाथ ने मसौदा पढ़ा, तो भड़क गए। उनका मानना था कि ऐतिहासिक तथ्यों को गलत ढंग से पेश किया गया है। उन्होंने मद्रास के प्रेसिडेंसी कॉलेज में छात्रों

रिसर्च'। 15 अगस्त 1973 को इंदिरा ने लाल किले के लाहौरी गेट के पास ये टाइम कैप्सूल दफनाया। 1 हजार साल तक सुरक्षित रखने के लिए कई इंतजाम किए गए।

मसलन- इसे तांबे और स्टील से बनाया गया, जिससे जंग और नमी का असर न पड़े। वैक्यूम-पैक्ड बनाया गया, ताकि हवा, गैस या धूल का असर न हो। उस वक्त इस पूरे प्रोजेक्ट पर 8 हजार रुपए खर्च हुए थे। हालांकि, टाइम कैप्सूल को लेकर इंदिरा का विरोध जारी रहा। 2 महीने बाद, यानी 15 अक्टूबर को सीपीएम(एम) के पोलित ब्यूरो मेंबर पी. राममूर्ति

कैप्सूल से निकाले गए दस्तावेजों को संसद की लाइब्रेरी में रखा गया।

इस पर कई बार चर्चा भी हुई, लेकिन उसमें क्या लिखा था, ये बात कभी जनता के सामने नहीं आई। दिसंबर 1973 में इंदिरा गांधी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि टाइम कैप्सूल में संविधान की कई माइक्रोफिल्म्स, इवेंट कैलेंडर और लिखित दस्तावेज हैं।

असली विवाद दस्तावेज को लेकर है। 2012 में सीनियर जर्नलिस्ट मधु किश्वर ने टाइम कैप्सूल को लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में एक आरटीआई लगाई। पीएमओ ने कहा कि उसके पास इंदिरा गांधी सरकार द्वारा 1973 में दफनाए गए कैप्सूल की चीजों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।बाद में मधु किश्वर ने केंद्रीय सूचना आयोग के सामने ये मुद्दा उठाया। फरवरी 2013 में आयोग ने पीएमओ को निर्देश दिया कि वे इस बारे में जानकारी जुटाएं, लेकिन पीएमओ की ओर से कोई ठोस जवाब नहीं आया। 12 साल बाद ये मुद्दा राज्यसभा में भी उठा। 16 दिसंबर 2024 को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने राज्यसभा में कहा कि इसे 5 हजार साल के लिए दफनाया गया और संसद को नहीं बताया गया। सीतारमण ने कहा कि कैप्सूल के दस्तावेजों में अटल बिहारी वाजपेयी के जनसंघ को सेक्युलर देश का विरोध करने वाली एक उग्रवादी रूढ़िवादी हिंदू पार्टी बताया था। इसमें सी. राजगोपालाचारी, राजेंद्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, जाकिर हुसैन और लाल बहादुर शास्त्री का कोई जिक्र नहीं था। लेखक कनैलाल बसु अपनी किताब 'नेताजी: रीडिस्कवर्ड' में लिखते हैं, 'इंदिरा गांधी और उनके कुछ करीबी लोगों के अलावा किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं थी कि उस टाइम कैप्सूल में क्या-क्या है। यहां तक कि सांसदों को भी कुछ पता नहीं था। जब भी सवाल उठाए गए, सरकार ने मामूली या टालने वाले जवाब देकर चुप करा दिया।' मार्च 2010 में तब की राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने IIT कानपुर के कैंपस में एक टाइम कैप्सूल दफनाया। कैप्सूल में IIT कानपुर के रिसर्च पेपर और वहां के शिक्षकों से जुड़ी जानकारियां रखी गई थीं, ताकि दुनिया में कोई बड़ी उथल-पुथल हो जाए तब भी संस्थान का इतिहास सुरक्षित रहे। मई 2010 में तब के गुजरात के सीएम नरेंद्र मोदी ने गांधीनगर में बन रहे महात्मा मंदिर की नींव में एक टाइम कैप्सूल दफनाया। सरकार का दावा था कि 3 फीट लंबे और ढाई फीट चौड़े स्टील के सिलेंडर में गुजरात के 50 साल के इतिहास को संजोया गया है। अंग्रेजी अखबार द टेलीग्राफ के मुताबिक, 90 किलो वजनी कैप्सूल में 14 लिखे दस्तावेज और 29 ऑडिया-वीडियो कॉम्पैक्ट डिस्क रखे हुए हैं, जिसमें 90फीसदी चीजें मोदी से जुड़ी हुई हैं। कांग्रेस ने इसका कड़ा विरोध किया और आरोप लगाया कि मोदी खुद का महिमामंडन करा रहे हैं।

कहा कि सत्ता में आते ही कैप्सूल निकलवाएंगे, लेकिन अब तक ऐसा नहीं हो सका है। फिर जनवरी 2019 में 106वीं भारतीय विज्ञान सम्मेलन के दौरान पंजाब के जालंधर की लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में भी एक टाइम कैप्सूल गाड़ा गया था। इसमें लैपटॉप, स्मार्टफोन, ड्रोन और वीआर चश्मे समेत 100 चीजें दफनाई गईं, जो 100 साल तक सहेजी जा सकती हैं।

इसे 3 जनवरी 2119 को निकाला जाएगा।

पिछले साल सिक्किम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिले 50 साल पूरे होने पर 21 अगस्त 2025 को राजधानी गंगटोक के ताशीलिंग सचिवालय परिसर में मौजूद रुस्तमजी डियर पार्क में सीएम प्रेम सिंह तमांग ने एक टाइम कैप्सूल दफनाया। 32 किलो वजनी गुलाबी-सुनहरे रंग के इस स्टील सिलेंडर में राज्य की 13 आधिकारिक भाषाओं में दस्तावेज, धान और औषधीय पौधों के बीज, पारंपरिक वाद्य यंत्र, नक्शे, मिट्टी, स्मार्टफोन-गैजेट वगैरह रखे गए। इसे 2075 तक के लिए दफनाया गया है।

आमिर खान की गौरी से शादी हुई, घरवालों से छिपकर पड़ोसी से पहली कोर्ट मैरिज की, जानिए 3 अहम रिश्तों की कहानी

मुंबई। मशहूर कहावत है कि 'दूसरा मौका सिर्फ कहानियां देती हैं, जिंदगी नहीं', लेकिन बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान ने ये कहावत गलत साबित कर दी। दो नाकाम शादियों के बाद आमिर ने जिंदगी को नया मौका दिया और आज वो 61 की उम्र में गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट से शादी कर चुके हैं। दोनों ने आमिर के घर में रजिस्टर्ड मैरिज की, जिसमें परिवार के लोगों के अलावा चुनिंदा करीबी दोस्त शामिल हुए। आमिर की पिछली दो शादियां भले ही नाकाम रहीं, लेकिन वो आज भी दोनों को जिंदगी के अहम किरदार मानते हैं। आमिर महज 20 साल के थे, जब उन्हें पड़ोस में रहने वालीं रीना से प्यार हो गया। तब वो फिल्मों में नहीं आए थे। घरवालों से चोरी-छिपे मुलाकात होना और घरवालों का गुस्सा, आमिर के खाते में आया। उन्होंने हार नहीं मानी और फिल्मी हीरो की तरह दुनिया की नजरों से छिपकर कोर्ट में शादी कर ली, जिसमें 10 रुपए खर्चा आया। दोनों कानूनी तौर पर पति-पत्नी बने, लेकिन दुनिया की नजरों में अपनी-अपनी जिंदगी जीते थे। संघर्ष लंबा रहा, लेकिन फिर दुनिया उनके प्यार के आगे झुकी और उनके रिश्ते को स्वीकार कर लिया। दोनों के 2 बच्चे आयरा और जुनैद हुए। शादी के 15 साल बाद ये रिश्ता टूट गया। आमिर के लिए ये असहनीय था। उन्होंने शराब का सहारा लिया और खुद को दुनिया से छिपा लिया, लेकिन कभी पहली पत्नी रीना और परिवार पर आंच नहीं आने दी। कुछ समय बाद आमिर की जिंदगी में एक रोज किरण राव की एंट्री हुई, जो उन्हीं की फिल्म की असिस्टेंट डायरेक्टर थीं। न कोई प्यार-मोहब्बत की बातें हुईं, न इजहार, न फैंसी डेट और न कोई प्लानिंग। कहानी महज एक आधे घंटे के कॉल से शुरू हुई। और फिर क्या था चट मंगनी और पट ब्याह। इस शादी से एक बेटा आजाद हुआ, लेकिन 2021 में दोनों ने अपनी-अपनी जिंदगियों को अहमियत देते हुए शादी तोड़ दी। लेकिन दोस्ती और एहसास बरकरार रहा। अब आमिर 61 की उम्र में गौरी स्प्रैट से शादी कर रहे हैं। गौरी तलाकशुदा हैं, जिनकी पिछली शादी से एक बेटा है।आमिर महज 20 साल के थे। वो बॉम्बे की जिस बिल्डिंग के चौथे माले पर रहते थे, उसके ठीक सामने एयर इंडिया की बिल्डिंग थी। दोनों का फासला महज 100 मीटर था। एक दिन खिड़की पर खड़े आमिर की नजर सामने की बिल्डिंग की खिड़की पर पड़ी। सामने उन्हें गोरी-खूबसूरत लड़की दिखी। पहली नजर में ही आमिर को वो लड़की इस कदर पसंद आई कि उनका ज्यादातर समय खिड़की पर ही कटने लगा। कुछ दिनों बाद आमिर ने गौर किया कि वो लड़की भी देर तक खिड़की पर ही दिखती है, कहीं उसे भी वो पसंद तो नहीं करती। आमिर की शिल्पा नाम की दोस्त भी उसी बिल्डिंग में रहती थी। आमिर ने नाम पता किया, जो था रीना दत्ता। आमिर ने एक दिन शिल्पा से कहा- मुझे वो लड़की बहुत पसंद है, लेकिन

वो हमेशा भीड़ में रहती है। वो तुम्हारी दोस्त है, उसे दुकान से सामान लेने के बहाने साथ लेकर निकलो और बुक्स लेने के बहाने मेरे घर ले आना। ठीक ऐसा ही हुआ, शिल्पा, रीना को आमिर के घर ले आईं। तीनों बेडरूम में बैठे और फिर शिल्पा, विक्की नाम के दोस्त से अर्जेंट काम के बहाने 2 मिनट का समय मांगकर वहां से निकल गईं। आमिर ने रीना को सच बता दिया कि इस कमरे में होना कोई संयोग नहीं बल्कि प्लान है। जवाब मिला- मैं समझ गई थी। आमिर ने झट से कहा- रीना, मैं आपको बहुत पसंद करता हूं। जवाब मिला- मुझे कोई इंट्रेस्ट नहीं। आमिर ने दबाव देकर पूछा, तब भी रीना ने यही कहा- मुझे दोस्ती नहीं करनी, कभी आगे फैसला बदला तो जरूर बताऊंगी। आमिर उदास हो गए और बस इतना ही कहा- चलो अब हम भी विक्की के घर ही चलते हैं। कुछ दिन बाद आमिर ने दोस्त के जरिए फिर रीना को मैसेज भेजा कि वो उनसे बस एक बार मिलना चाहते हैं। बात बन गई। आमिर ने रीना को कॉलेज से पिक किया और कैफे ले गए। आमिर ने सीधे पूछा- मुझे यकीन नहीं होता कि आप मुझे पसंद नहीं करतीं। अगर ऐसा है, तो आप घंटों मुझे देखते हुए खिड़की पर क्यों खड़ी रहती थीं। रीना का जवाब शॉकिंग था, उन्होंने कहा- बस ऐसे ही फन के लिए। आमिर का दिल टूट गया, उन्हों खिड़की पर जाना ही बंद कर दिया। एक महीने बाद बस स्टॉप के पास उनका रीना से सामना हुआ। आमिर हाय-हैलो कर आगे बढ़ गए कि पीछे से आवाज आई- आमिर। वो पलटे तो रीना घबराई हुई पास आईं और कहा- मुझे तुमसे जरूरी बात करनी है। उन्होंने कहा- बताओ। रीना ने कहा- यहां नहीं, कल घर आऊंगी। 7 सितंबर 1985 को घर आते ही रीना ने कहा- मैं भी तुम्हें पसंद करती हूं। मैं उस दिन डर गई थी। पेरेंट्स स्ट्रिक्ट हैं, इसलिए न कहा था।रिश्ता शुरू हुआ। दोनों खिड़कियों से इशारों में बात करते और मौका पाते ही टेलीफोन पर बातें करते। 1986 की 1 जनवरी को रीना और आमिर ने आधे घंटे कॉल पर बात की और रीना की मम्मी ने एक्सेंटशन फोन से पूरी बात सुन ली। आमिर को घर बुलाया गया। रीना की मां ने आमिर को डांटकर भगा दिया और कहा कि 2 दिन बाद रीना के पिता बात करेंगे। जब तक आमिर घर पहुंचे, सारी खिड़कियां बंद कर दी गईं। रीना को घर में बंद कर दिया गया। 4-5 दिन बाद एक रोज आमिर ने एक आधी खुली खिड़की से रीना को रोते देखा और आग बबूला हो गए। उन्होंने कॉल कर रीना की मां से मिन्नतें कीं, लेकिन बात नहीं बनी। कुछ दिन बाद रीना के छोटे भाई-बहन आमिर को समझाने पहुंचे कि रीना से दूर रहो। उल्टा गुस्से में आमिर रीना के घर पहुंच गए। रीना के मां-बाप ने धमकी दी कि मेरी बेटी से दूर रहो वर्ना टांगे तुड़वा दी जाएंगी। आमिर घर लौटे। कुछ दिनों बाद रीना को कॉलेज जाने की परमिशन मिली। खबर मिलते ही आमिर कॉलेज पहुंचे और रीना से पूछा कि क्या वो साथ रहना चाहती हैं। रीना की हामी मिलते ही आमिर को तसल्ली हुई। घरवालों से छिपकर बात करने के लिए दोनों सड़क पर रोज एक सीक्रेट स्पॉट पर लेटर छोड़ने लगे। कुछ दिनों आमिर ने खत में घरवालों से छिपकर शादी करने का प्रस्ताव दिया। शादी सिर्फ इसलिए, जिससे रीना के घरवाले उनकी कहीं और शादी न करवा सकें। रीना ने एक दिन का समय मांगा और हां कर दिया। आमिर ने दोस्त सत्या के घर जाकर स्पेशल मैरिज एक्ट पढ़ा। अब दिक्कत ये थी कि फरवरी 1986 में आमिर महज 20 के थे, जबकि शादी की लीगल उम्र 21 साल थी। 14 मार्च 1986 को आमिर 21 के हुए और अगले दिन जाकर उन्होंने शादी के लिए एप्लीकेशन दे दी। एक महीने बाद 15 अप्रैल को एप्लीकेशन वैलिड हुई, लेकिन 16-17 को वीकेंड होने की वजह से 18 अप्रैल को दोनों चोरी-छिपे मैरिज रजिस्टार के दफ्तर पहुंचे और शादी की। आमिर का भाई फैसल, दोस्त विक्की, सत्या और स्वाति गवाह बने। शादी के बाद दोनों अपने-अपने घर चले गए। 8 महीने तक सब कुछ ठीक रहा, लेकिन फिर एक दिन भावनाओं में बहकर रीना ने छोटी बहन अन्नू को शादी की बात बता दी। उस दिन रीना के पेरेंट्स चेन्नई गए हुए थे। छोटी बहन ने तुरंत कॉल कर उन्हें सारी बात बता दी। पेरेंट्स अगले दिन लौटने वाले थे। आमिर बहुत डर गए। वो रीना को घर ले आए और अपने घरवालों को इकट्ठा किया। सबको लगा कि आमिर अपनी गर्लफ्रेंड से मिलवाएंगे, लेकिन रोते-बिलखते आमिर ने कहा- मैंने शादी कर ली है। सन्नाटा पसर गया। औरतें रोने लगीं। आमिर भी खूब रो रहे थे। तभी पिता पास आए और गले लगाकर कहा- अब तो शादी हो गई, अब क्यों रो रहे हो। आमिर ने कहा- रीना के घरवाले आज बॉम्बे आ रहे हैं, उन्हें भी अभी पता चला है। उनका क्या करेंगे। पिता ने कहा, वो रीना के पेरेंट्स से बात करेंगे। रीना ने घर पर कॉल किया, तो जवाब मिला- घर आने और मिलने की जरुरत नहीं है। रीना फिर घर नहीं गईं। 4 महीने बाद रीना के पिता की तबीयत बिगड़ी तो रीना आमिर के साथ हॉस्पिटल पहुंचीं। पिता ने बात नहीं की, लेकिन आमिर ने पैर छुआ तो उन्होंने चेहरा हिलाकर आशीर्वाद दिया। कुछ दिनों बाद जब वो डिस्चार्ज हुए, तो आमिर घर जाने लगे। एक दिन खाना खाते हुए उन्होंने आमिर से कहा- मुझे पहले ही तुम से मिल लेना था। रीना के लिए तुमसे अच्छा लड़का मुझे कभी नहीं मिलता। शादी के कुछ समय बाद ही आमिर खान की फिल्म कयामत से कयामत तक रिलीज हुई, जिससे वो स्टार बन गए। आमिर ने स्टारडम पर असर न पड़े, इसलिए शुरुआती कुछ सालों तक उन्होंने शादी राज रखी। इस शादी से उन्हें दो बच्चे आयरा और जुनैद हुए। हालांकि, बढ़ते स्टारडम के साथ आमिर का परिवार को समय देना मुश्किल होता चला गया। यही वजह रही कि रीना ने 2001 में आमिर का घर छोड़कर चली गईं। इसी साल आमिर की लगान रिलीज हुई, जो ब्लॉकबस्टर रही। रीना इसकी को-प्रोड्यूसर थीं। आमिर ने अपना ड्राइवर और कुक रीना और बच्चों के साथ भेजा और अकेले रहने लगे। तलाक से आमिर इस कदर टूट गए कि कभी शराब को हाथ न लगाने वाले आमिर शराबी बन गए। करीब डेढ़ साल तक आमिर रोज इतनी शराब पीते थे, जिससे उन्हें नींद आ जाए। उन्होंने काम करना भी लगभग बंद कर दिया। जूही चावला, अनिल कपूर जैसे कई दोस्त उन्हें सहारा देने घर भी पहुंचते थे। एक साल अलग रहने के बाद 2002 में दोनों का आधिकारिक तौर पर तलाक हुआ और बच्चों की कस्टडी रीना को मिली, लेकिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को बच्चे 2 से 6 बजे तक आमिर से मिलने आते थे। सिर्फ यही वो समय था, जब आमिर शराब छूते तक नहीं थे। आमिर खान की किरण राव से पहली मुलाकात फिल्म लगान के सेट पर हुई। किरण राव मिडिल क्लास परिवार से ताल्लुक रखती थीं, जो लगान के डायरेक्टर आशुतोष गोवारिकर की असिस्टेंट डायरेक्टर थीं। तब दोनों ने एक-दूसरे को ज्यादा तवज्जो नहीं दी। कुछ समय बाद आमिर ने कोका कोला एड में काम किया, जिसे आशुतोष ने डायरेक्टर और किरण ने असिस्टेंट डायरेक्ट किया था। 2003 में काम के सिलसिले में आमिर-किरण की बातचीत होने लगी। फिर आया साल 2004, आमिर खान महाराष्ट्र के मेनावली में केतन मेहता के निर्देशन की फिल्म मंगल पांडे की शूटिंग कर रहे थे, ठीक इसी जगह शाहरुख की फिल्म स्वदेश की भी शूटिंग चल रही थी, जिसे आशुतोष गोवारिकर बना रहे थे।

मेनावली गांव में शूटिंग के दौरान अक्सर किरण और आमिर की बातें होने लगीं। वो कभी-कभी साथ ड्राइव पर जाते थे। एक रोज किरण ने आमिर को काम के सिलसिले में कॉल किया। आधे घंटे की बातचीत के बाद आमिर ने खुशी महसूस की और उन्होंने किरण के साथ रहने का फैसला कर लिया। जल्द ही दोनों रिलेशनशिप में आ गए और एक-दूसरे को समझने के लिए लिव-इन में रहने लगे। किरण राव के परिवार को जब इसकी जानकारी मिली, तो उन्होंने इस रिश्ते का विरोध किया। आमिर, किरण से 8 साल बड़े थे, तलाकशुदा थे और दो बच्चों के पिता थे। किरण ने परिवार के खिलाफ जाकर 28 दिसंबर 2005 में आमिर से सिविल मैरिज की। मुंबई के पंचगनी में 2 दिनों का सेलिब्रेशन रखा गया और महेरबाई हाउस नाम के पारसी बंगले में उनका रिसेप्शन हुआ। किरण ने 2011 में फिल्म धोबी घाट से डायरेक्टोरियल डेब्यू किया, जिसमें आमिर खान लीड रोल में थे। इसी साल किरण सरोगेसी की मदद मां बनीं। उनके बेटे का नाम आजाद राव खान रखा गया। किरण, आमिर खान प्रोडक्शन से जुड़ी रहीं। साल 2021 में आमिर और किरण ने मिलकर खुशी-खुशी एक वीडियो के जरिए तलाक की अनाउंसमेंट की। दोनों ने कहा कि वो हमेशा दोस्त रहेंगे और मिलकर बेटे आजाद की परवरिश करेंगे। तलाक के बाद भी दोनों पूर्व पत्नियों को देते हैं अहमियत:- आमिर खान, तलाक के बाद भी रीना दत्ता और किरण राव को पूरा सम्मान देते हैं। 2024 में हुई बेटी आयरा की शादी में आमिर खान ने रीना के साथ मिलकर पूरी जिम्मेदारियां उठाईं और किरण राव भी बेटे आजाद के साथ हर फंक्शन में बराबर की भागीदार रहीं।किरण राव से अलग होने के बाद आमिर खान ने थैरेपी लेनी शुरू की और फिल्म लाल सिंह चड्ढा से कमबैक किया। फिल्म खास नहीं चली और आमिर ने एक्टिंग से ब्रेक लेने की अनाउंसमेंट कर दी। 2025 में आमिर खान ने 60वें जन्मदिन के मौके पर मीडिया और पैपराजी को इनवाइट किया और बताया कि वो एक बड़ी अनाउंसमेंट करने वाले हैं। हर कोई इस उम्मीद में पहुंचा कि आमिर नई फिल्म पर बात करेंगे, लेकिन बात कुछ और ही थी। आमिर ने केक काटने के बाद सबसे गौरी स्प्रैट का परिचय करवाया, आमिर की गर्लफ्रेंड। शुरुआत में गौरी की तस्वीरें क्लिक करने से रोका गया, लेकिन जल्द ही दोनों पब्लिकली साथ स्पॉट होने लगे। आमिर खान ने बताया कि वो गौरी को पिछले 25 सालों से जानते थे, लेकिन 2024 में दोनों की कॉमन लोगों की मदद से फिर बातचीत शुरू हुई और फिर दोनों एक-दूसरे को पसंद करने लगे। गौरी स्प्रैट बेंगलुरु की रहने वालीं हैं, जिनका पिछली शादी से एक 8 साल का बेटा है।

आमिर ने कहा- अब जाकर मुकम्मल हुआ:-आमिर खान ने गौरी से रिश्ते पर बात करते हुए कहा था-'मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे गौरी मिलीं और हमारा रिश्ता शुरू हुआ। वह बेहतरीन हैं और उनके साथ मुझे बहुत शांति मिलती है। हालांकि रीना दत्ता और किरण राव के साथ भी मेरा रिश्ता बहुत गहरा था, लेकिन चीजें आगे नहीं बढ़ पाईं। मैं खुद को खुशनसीब मानता हूं कि गौरी मेरी जिंदगी में आईं। मुझे लगता है, अब जाकर मैं मुकम्मल हुआ हूं।'

गौरव खन्ना से शादी से पहले बायसेक्सुअल थीं आकांक्षा चमोला,एक्ट्रेस बोलीं- लड़कियों के साथ रिलेशनशिप में थी, उनकी तरफ अट्रैक्ट होती हूं

मुंबई। एक्ट्रेस आकांक्षा चमोला ने हाल ही में एक शो में बताया कि गौरव खन्ना से शादी से पहले वे बायसेक्सुअल थीं। लॉक अप सीजन 2 के एक एपिसोड के दौरान आकांक्षा ने कहा, 'मैं शादी से पहले बायसेक्सुअल थी। मेरे कुछ लड़कियों के साथ रिलेशन रहे हैं। बहुत ज्यादा इंटिमेट रिलेशन नहीं रहे हैं, लेकिन मैं कुछ लड़कियों के साथ रिलेशनशिप में रही हूं और बस वही है। मतलब मुझे लड़कियां पसंद हैं। मैं उन्हें एडमायर करती हूं, मैं उनकी तरफ अट्रैक्ट होती हूं और मुझे लगता है कि यही मेरा सेफ स्पेस है।' वहीं, आकांक्षा के बायसेक्सुअल होने वाले बयान के बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने इसे सिर्फ पब्लिसिटी पाने का तरीका बताया। एक यूजर ने लिखा, 'यह सब सिर्फ पब्लिसिटी के लिए बोला गया है।' दूसरे यूजर ने कहा, 'रियलिटी शोज का एक ही फॉर्मूला है, लोगों को चौंकाओ, ट्रेंड में आओ और फिर वही दोहराओ।'वहीं, एक अन्य यूजर ने लिखा, 'ये सब शो चलाने के लिए किया गया ड्रामा है। सब पहले से स्क्रिप्टेड होता है। 'बच्चे न चाहने की वजह से अलग हो रहे:- हाल ही में लॉक अप शो के दौरान आकांक्षा ने अपने पति गौरव खन्ना से अलग होने का एलान किया था। अपने को-कंटेस्टेंट्स श्रेया कालरा और सूफी मोतीवाला से बातचीत में उन्होंने इसकी वजह का खुलासा किया था। आकांक्षा ने बताया था कि शादी के बाद भी उनमें कभी बच्चों को लेकर 'मैटरनल इंस्टिंक्ट' (मां बनने की इच्छा) नहीं जागी। उन्होंने शुरुआत में इसे समझने की कोशिश की, लेकिन बाद में उन्हें अहसास हुआ कि वे इसके लिए नहीं बनी हैं। आकांक्षा के मुताबिक, गौरव पहले इस बात से सहमत थे, लेकिन समय के साथ उनकी सोच बदल गई और अब उन्हें बच्चे चाहिए, जबकि आकांक्षा बच्चे नहीं चाहती हैं। एक साल से अलग रह रहे हैं दोनों:-आकांक्षा ने यह भी कहा था कि वे और गौरव पिछले एक साल से एक-दूसरे से अलग रह रहे हैं। उन्होंने गौरव से बातचीत में कहा था कि अगर वे इस वजह से अलग होना चाहते हैं, तो यह फैसला बिल्कुल सही है। सोशल मीडिया पर इस एलान के बाद से ही काफी चर्चा हुई। कई सोशल मीडिया यूजर्स ने इसे शो के लिए पीआर स्टंट भी बताया था। वहीं, आकांक्षा के तलाक के ऐलान के बाद 30 जून को मीडिया से बात करते हुए गौरव ने कहा था, 'प्यार आज भी उतना ही है और सपोर्ट भी उतना ही है। मैं हमेशा आकांक्षा को सपोर्ट करूंगा। वो मेरी बीवी है। प्यार किया तो पीछे क्यों हटूं।' गौरव ने आगे कहा था कि वे हमेशा आकांक्षा के साथ खड़े हैं और चाहते हैं कि वो शो में अच्छा खेलें और जीतकर आएं। नवंबर 2016 में हुई थी गौरव-आकांक्षा की शादी गौरव खन्ना और आकांक्षा चमोला के रिश्ते की शुरुआत टीवी इंडस्ट्री में काम करने के दौरान हुई थी। दोनों की पहली मुलाकात एक ऑडिशन के सिलसिले में हुई थी, जिसके बाद वे दोस्त बन गए। लंबे समय तक एक-दूसरे को डेट करने के बाद, दोनों ने 24 नवंबर 2016 को कानपुर में शादी की थी। गौरव खन्ना ने जहां 'अनुपमा' और 'बिग बॉस 19' जैसे शो में काम किया है। वहीं आकांक्षा चमोला भी 'स्वरागिनी', 'संतोषी मां', 'ये है आशिकी' और 'क्राइम पेट्रोल' जैसे शोज में नजर आ चुकी हैं।

पाकिस्तानी एक्ट्रेस के नाम से वायरल पोस्ट फेक-'धुरंधर का पाकिस्तान की तरफ से जवाब, अल्फा जरूर देखें' वाला दावा झूठा

मुंबई। सोशल मीडिया पर पाकिस्तानी एक्ट्रेस इकरा अजीज के नाम से एक पोस्ट वायरल है। इसमें दावा किया जा रहा है कि उन्होंने आलिया भट्ट और शरवरी स्टारर फिल्म अल्फा देखने की अपील की और लिखा कि 'अल्फा, धुरंधर का पाकिस्तान की तरफ से जवाब है।' साथ ही वाईआरएफ का शुक्रिया भी अदा किया।सोशल मीडिया के कई प्लेटफॉर्म्स पर इकरा अजीज के नाम और तस्वीर के साथ पोस्ट शेयर किया जा रहा है। दावा है कि उन्होंने लिखा, 'अल्फा जरूर देखिए। यह धुरंधर का पाकिस्तान की तरफ से जवाब है। शुक्रिया अल्फा।' इसी पोस्ट के आधार पर कई यूजर्स इकरा अजीज को ट्रोल कर रहे हैं और इसे सच मानकर शेयर भी कर रहे हैं। फैक्ट चेक में क्या सामने आया? पड़ताल में इस दावे की पुष्टि नहीं हुई। इकरा अजीज के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट्स पर अल्फा या वाईआरएफ को लेकर ऐसा कोई पोस्ट नहीं मिला। वाईआरएफ से जुड़े सूत्रों ने भी इस पोस्ट को फर्जी बताया। उनके मुताबिक, इसे ट्रोलिंग और गलत जानकारी फैलाने के उद्देश्य से बनाया गया है। इसका वाईआरएफ या फिल्म अल्फा के प्रमोशन से कोई संबंध नहीं है। एडिटेड स्क्रीनशॉट होने की आशंका:-वायरल तस्वीर का स्क्रीन

शॉट इकरा अजीज के आधिकारिक अकाउंट से किया गया था। इसलिए इसे प्रमाणिक नहीं माना जा सकता। निष्कर्ष-दावा: इकरा अजीज ने 'अल्फा' देखने की अपील की और इसे 'धुरंधर का पाकिस्तान की तरफ से जवाब' बताते हुए वाईआरएफ का धन्यवाद किया। सच्चाई: पड़ताल में दावा फर्जी निकला। इकरा अजीज के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट्स पर ऐसा कोई पोस्ट नहीं मिला। वाईआरएफ सूत्रों ने भी पोस्ट को फेक बताते हुए कहा कि इसे ट्रोलिंग और गलत जानकारी फैलाने के उद्देश्य से वायरल किया जा रहा है। बता दें कि वाईआरएफ की स्पाई थ्रिलर 'अल्फा' 3 जुलाई 2026 को रिलीज हुई। यह स्पाई यूनिवर्स की पहली फीमेल-लीड फिल्म है, जिसमें दो महिला जासूस मुख्य भूमिका में हैं। वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स में पहले एक था टाइगर, टाइगर जिंदा है, वॉर, पठान और टाइगर 3 जैसी फिल्में आ चुकी हैं।

'अल्फा' इस फ्रेंचाइजी की पहली फीमेल-लीड फिल्म है। 'अल्फा' एक स्पाई एक्शन थ्रिलर है, जिसमें एक लड़की बचपन से खतरनाक मिशनों के लिए तैयार की जाती है और आगे चलकर देश के जोखिम भरे ऑपरेशन्स का हिस्सा बनती है।

फिल्म में आलिया भट्ट, शरवरी, बॉबी देओल, अनिल कपूर और आर. माधवन प्रमुख भूमिकाओं में हैं। कुछ सरप्राइज कैमियो भी शामिल हैं। फिल्म का निर्देशन शिव रवैल ने किया है, जबकि निर्माण आदित्य चोपड़ा और वाईआरएफ ने किया है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।